नीतिवचन

1 दाऊद के पुत्र और इस्राएल के राजा सुलैमान के
नीतिवचन।
यह शब्द इसलिये लिखे गये हैं,
2ताकि मनुष्य बुद्धि को पाये, अनुशासन को ग्रहण
करे, जिनसे समझ भरी बातों का ज्ञान हो, 3ताकि
मनुष्य विवेकशील, अनुशासित जीवन पाये, और
धर्म-पूर्ण, न्याय-पूर्ण, पक्षपातरहित कार्य करे, 4सरल
सीधे जन को विवेक और ज्ञान तथा युवकों को अच्छे
बुरे का भेद सिखा (बता) पायें। 5बुद्धिमान उन्हें सुन
कर निज ज्ञान बढ़ावें और समझदार व्यक्ति दिशा
निर्देश पायें, 6ताकि मनुष्य नीतिवचन, ज्ञानी के दृष्टाँतो
को और पहेली भरी बातों को समझ सकें।
7यहोवा का भय मानना ज्ञान का आदि है किन्तु
मूर्ख जन तो बुद्धि और अनुशासन को तुच्छ मानते हैं।

विवेकपूर्ण बनो
चेतावनी: प्रलोभन से बचो

8हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा पर ध्यान दे
और अपनी माता की नसीहत को मत भूल। 9 वे तेरा
सिर सजाने को मुकुट और शोभायमान करने तेरे
गले का हार बनेंगे।

चेतावनी: बुरी संगत से बचो

10हे मेरे पुत्र, यदि पापी तुझे बहलाने फुसलाने आयें
उनकी कभी मत मानना। 11और यदि वे कहें, "आजा
हमारे साथ! आ, हम किसी के घात में बैठे! आ निर्दोष
पर छिपकर वार करें! 12आ, हम उन्हें जीवित ही
सारे का सारा निगल जायें वैसे ही जैसे कब्र निगलती
हैं। जैसे नीचे पाताल में कहीं फिसलता चला जाता है।
13हम सभी बहुमूल्य वस्तुयें पा जायेंगे और अपने इस
लूट से घर भर लेंगे। 14अपने भाग्य का पासा हमारे
साथ फेंक, हम एक ही बटुवे के सहभागी होंगे!"
15हे मेरे पुत्र, तू उनकी राहों पर मत चल, तू
अपने पैर उन पर रखने से रोक। 16क्योंकि उनके
पैर पाप करने को शीघ्र बढ़ते, वे लहू बहाने को अति
गतिशील हैं।
17कितना व्यर्थ है, जाल का फैलाना जबकि सभी
पक्षी तुझे पूरी तरह देखते हैं। 18जो किसी का खून
बहाने प्रतीक्षा में बैठे हैं वे अपने आप उस जाल में
फँस जायेंगे! 19जो ऐसे बुरे लाभ के पीछे पड़े रहते हैं
उन सब ही का यही अंत होता है। उन सब के प्राण
हर ले जाता है; जो इस बुरे लाभ को अपनाता है।

चेतावनी: बुद्धिहीन मत बनो

20बुद्धि! तो मार्ग में ऊँचे चढ़ पुकारती है, चौराहों पर
अपनी आवाज़ उठाती है। 21 शोर भरी गलियों के मनुक्कड़
पर पुकारती है, नगर के फाटक पर निज भाषण देती है:
22"अरे भोले लोगों! तुम कब तक अपना मोह
सरल राहों से रखोगे? उपहास करनेवालों, तुम कब
तक उपहासों में आनन्द लोगे? अरे मूर्खो, तुम कब
तक ज्ञान से घृणा करोगे? 23यदि मेरी फटकार तुम
पर प्रभावी होती तो मैं तुम पर अपना हृदय उंडेल देती
और तुम्हें अपने सभी विचार जना देती।
24"किन्तु क्योंकि तुमने तो मुझको नकार दिया
जब मैंने तुम्हें पुकारा, और किसी ने ध्यान न दिया, जब
मैंने अपना हाथ बढ़ाया था। 25तुमने मेरी सब सम्मत्तियाँ
उपेक्षित कीं और मेरी फटकार कभी नहीं स्वीकारीं!
26इसलिए, बदले में, मैं तेरे नाश पर हसूँगी। मैं उपहास
करूँगी जब तेरा विनाश तुझे घेरेगा!
27जब विनाश तुझे वैसे ही घेरेगा जैसे भीषण बबूले सा
बवण्ड़र घेरता है, जब विनाश जकडेगा, और जब विनाश
तथा संकट तुझे डुबो देंगे।
28"तब, वे मुझको पुकारेंगे किन्तु मैं कोई भी उत्तर
नहीं दूँगी। वे मुझे ढूँढते फिरेंगे किन्तु नहीं पायेंगे। 29क्योंकि

वे सदा ज्ञान से घृणा करते रहे, और उन्होंनें कभी
नहीं चाहा कि वे यहोवा से डरें। 30क्योंकि वे, मेरा
उपदेश कभी नहीं धारण करेंगे, और मेरी ताड़ना का
तिरस्कार करेंगे। 31वे अपनी करनी का फल अवश्य
भोगेंगे, वे अपनी योजनाओं के कुफल से अघायेंगे!
32“सीधों की मनमानी उन्हें ले डूबेगी, मूर्खो का
आत्म सुख उन्हें नष्ट कर देगा। 33किन्तु जो मेरी
सुनेगा वह सुरक्षित रहेगा, वह बिना किसी हानि के
भय से रहित वह सदा चैन से रहेगा।”

बुद्धि के नैतिक लाभ

2 हे मेरे पुत्र, यदि तू मेरे बोध वचनों को ग्रहण करे
और मेरे आदेश मन में संचित करे, 2और तू
बुद्धि की बातों पर कान लगाये, मन अपना समझदारी
में लगाते हुए 3और यदि तू अन्तर्दृष्टि के हेतु पुकारे,
और तू समझबूझ के निमित्त चिल्लाये, 4यदि तू इसे
ऐसे ढूँढे जैसे कोई मूल्यवान चाँदी को ढूँढता है, और
तू इसे ऐसे ढूँढ, जैसे कोई छिपे हुए कोष को ढूँढता है
5तब तू यहोवा के भय को समझेगा और परमेश्वर
का ज्ञान पायेगा।
6क्योंकि यहोवा ही बुद्धि देता है और उसके मुख से
ही ज्ञान और समझदारी की बाते फूटता है। 7उसके
भंडार में खरी बुद्धि उनके लिये रहती जो खरे हैं,
और उनके लिये जिनका चाल चलन विवेकपूर्ण रहता
है। वह जैसे एक ढाल है। 8न्याय के मार्ग की रखवाली
करता है और अपने भक्तों की वह राह संवारता है।
9तभी तू समझेगा की नेक क्या है, न्यायपूर्ण क्या
है, और पक्षपात रहित क्या है, यानी हर भली राह।
10बुद्धि तेरे मन में प्रवेश करेगी और ज्ञान तेरी आत्मा
को भाने लगेगा।
11तुझको अच्छे–बुरे का बोध बचायेगा, समझ बूझ भरी
बुद्धि तेरी रखवाली करेगी, 12बुद्धि तुझे कुटिलों की राह से
बचायेगी, बुद्धि तुझे ऐसे उन लोगों से बचाएगी जो बुरी बात
बोलते हैं। 13अंधेरी गलियों में आगे बढ़ जाने को वे सरल–सीधी
राहों को तजते रहते हैं। 14वे बुरे काम करने में सदा आनन्द
मनाते हैं, वे पापपूर्ण कर्मो में सदा मग्न रहते हैं। 15उन लोगों
पर विश्वास नहीं कर सकते। वे झूठे है और छल करने
वाले है। किन्तु तेरी बुद्धि और समझ तुझे इन बातों से बचायेगी।
16यह बुद्धि तुझको वेश्या और उसकी फुसलाती हुई मधुर
वाणी से बचायेगी। 17जिसने अपने यौवन का साथी त्याग
दिया जिससे वाचा कि उपेक्षा परमेश्वर के समक्ष
किया था। 18क्योंकि उसका निवास मृत्यु के गर्त में
गिराता है और उसकी राहें नरक में ले जाती हैं। 19जो
भी निकट जाता है कभी नहीं लौट पाता और उसे
जीवन की राहें कभी नहीं मिलती! 20अत: तू तो भले
लोगों के मार्ग पर चलेगा और तू सदा नेक राह पर
बना रहेगा। 21क्योंकि खरे लोग ही धरती पर बसे
रहेंगे और जो विवेकपूर्ण हैं वे ही टिक पायेंगे। 22किन्तु
जो दुष्ट है वे तो उस देश से काट दिये जायेगें।

उत्तम जीवन से संपन्नता

3 हे मेरे पुत्र, मेरी शिक्षा मत भूल, बल्कि तू मेरे
आदेश अपने हृदय में बसा ले। 2क्योंकि इनसे तेरी
आयु वर्षों वर्ष बढ़ेगी और ये तुझको सम्पन्न कर देगें।
3प्रेम, विश्वसनीयता कभी तुझको छोड़ न जाये, तू
इनका हार अपने गले में डाल, इन्हें अपने मन के
पटल पर लिख ले। 4फिर तू परमेश्वर और मनुज
की दृष्टि में उनकी कृपा और यश पायेगा।

यहोवा में विश्वास रख

5अपने पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रख! तू अपनी
समझ पर भरोसा मत रख। 6उसको तू अपने सब
कामों में याद रख। वहीं तेरी सब राहों को सीधी करेगा।
7अपनी ही आँखों में तू बुद्धिमान मत बन, यहोवा से
ड़रता रह और पाप से दूर रह। 8इससे तेरा शरीर पूर्ण
स्वस्थ रहेगा और तेरी अस्थियाँ पुष्ट हो जायेंगी।

यहोवा को अर्पित कर

9अपनी सम्पत्ति से, और अपनी उपज के पहले फलों
से यहोवा का मान कर। 10तेरे भण्डार ऊपर तक भर
जायेंगे, और तेरे मधुपात्र नये दाखमधु से उफनते रहेंगे।

यहोवा का दण्ड स्वीकार ले

11हे मेरे पुत्र, यहोवा के अनुशासन का तिरस्कार
मत कर, उसकी फटकार का बुरा कभी मत मान।
12क्यों? क्योंकि यहोवा केवल उन्हीं को डाँटता है
जिनसे वह प्यार करता है। वैसे ही जैसे पिता उस पुत्र
को डाँटे जो उसको अति प्रिय है।

विवेक का महत्व

13धन्य है वह मनुष्य, जो बुद्धि पाता है। वह मनुष्य धन्य है जो समझ प्राप्त करें। 14बुद्धि, मूल्यवान चाँदी से अधिक लाभदायक है, और वह सोने से उत्तम प्रतिदान देती है! 15बुद्धि मणि माणिक से अधिक मूल्यवान है। उसकी तुलना कभी किसी उस वस्तु से नहीं हो सकती है जिसे तू चाह सके!

16बुद्धि के दाहिने हाथ में सुदीर्घ जीवन है, उसके बायें हाथ में सम्पत्ति और सम्मान है। 17उसके मार्ग मनोहर हैं और उसके सभी पथ शांति के रहते हैं। 18बुद्धि उनके लिये जीवन वृक्ष है जो इसे अपनाते हैं, वे सदा धन्य रहेंगे जो दृढता से बुद्धि को थामे रहते हैं!

19यहोवा ने धरती की नींव बुद्धि से धरी, उसने समझ से आकाश को स्थिर किया। 20उसके ही ज्ञान से गहरे सोते फूट पड़े और बादल ओस कण बरसाते हैं।

21हे मेरे पुत्र, तू अपनी दृष्टि से भले बुरे का भेद और बुद्धि के विवेक को ओझल मत होने दे। 22वे तो तेरे लिये जीवन बन जायेंगे, और तेरा कंठ को सजाने एक आभूषण। 23तब तू सुरक्षित बना निज मार्ग विचरेगा और तेरा पैर कभी ठोकर नहीं खायेगा। 24तुझको सोने पर कभी भय नहीं व्यापेगा और सो जाने पर तेरी नींद मधुर होगी। 25आकस्मिक नाश से तू कभी मत डर, या उस विनाश से जो दुष्टों पर आ पड़ता है। 26क्योंकि तेरा विश्वास यहोवा बन जायेगा और वह ही तेरे पैर को फंदे में फँसने से बचायेगा।

27जब तक ऐसा करना तेरी शक्ति में हो अच्छे को उनसे बचा कर मत रख जो जन अच्छा फल पाने योग्य है। 28जब अपने पड़ोसी को देने तेरे पास रखा हो तो उससे ऐसा मत कह कि "बाद में आना कल तुझे दूँगा।"

29तेरा पड़ोसी विश्वास से तेरे पास रहता हो तो उसके विरुद्ध उसको हानि पहुँचाने के लिये कोई षड़यंत्र मत रच।

30बिना किसी कारण के किसी को मत कोस, जबकि उस जन ने तुझे क्षति नहीं पहुँचाई है।

31किसी बुरे जन से तू द्वेष मत रख और उसकी सी चाल मत चल। तू अपनी चल। 32क्यों? क्योंकि यहोवा कुटिल जन से घृणा करता है और सच्चरित्र जन को अपनाता है।

33दुष्ट के घर पर यहोवा का शाप रहता है, वह नेक के घर को आर्शीवाद देता है।

34वह गर्वीले उच्छृंखल की हंसी उड़ाता है किन्तु दीन जन पर वह कृपा करता है।

35विवेकी जन तो आदर पायेंगे, किन्तु वह मूर्खो को, लज्जित ही करेगा।

विवेक का महत्व

4 हे मेरे पुत्रों, एक पिता की शिक्षा को सुनों उस पर ध्यान दो और तुम समझ बूझ पा लो! 2मैं तुम्हें गहन–गम्भीर ज्ञान देता हूँ। मेरी इस शिक्षा का त्याग तुम मत करना।

3जब मैं अपने पिता के घर एक बालक था और माता का अति कोमल एक मात्र शिशु था, 4मुझे सिखाते हुये उसने कहा था– मेरे वचन अपने पूर्ण मन से थामे रह। मेरे आदेश पाल तो तू जीवित रहेगा। 5तू बुद्धि प्राप्त कर और समझ बूझ प्राप्त कर! मेरे वचन मत भूल और उनसे मत ड़िग। 6बुद्धि मत त्याग वह तेरी रक्षा करेगी, उससे प्रेम कर वह तेरा ध्यान रखेगी।

7बुद्धि का आरम्भ ये है: तू बुद्धि प्राप्त कर,चाहे सब कुछ दे कर भी तू उसे प्राप्त कर! तू समझबूझ प्राप्त कर। 8तू उसे महत्व दे, वह तुझे ऊँचा उठायेगी, उसे तू गले लगा ले वह तेरा मान बढायेगी। 9वह तेरे सिर पर शोभा की माला धरेगी और वह तुझे एक वैभव का मुकुट देगी।

10सुन, हे मेरे पुत्र। जो कुछ मैं कहता हूँ तू उसे ग्रहण कर! तू अनगिनत सालों साल जीवित रहेगा। 11मैं तुझे बुद्धि के मार्ग की राह दिखाता हूँ, और सरल पथों पर अगुवाई करता हूँ। 12जब तू आगे बढेगा तेरे चरण बाधा नहीं पायेंगे, और जब तू दौड़ेगा ठोकर नहीं खायेगा। 13शिक्षा को थामे रह, उसे तू मत छोड़। इसकी रखवाली कर। यही तेरा जीवन है।

14तू दुष्टों के पथ पर चरण मत रख या पापी जनों की राह पर मत चल। 15तू इससे बचता रह, इसपर कदम मत बढ़ा। इससे तू मुड़ जा। तू अपनी राह चल। 16वे बुरे काम किये बिना सो नहीं पाते। वे नींद खो बैठते हैं जब तक किसी को नहीं गिराते। 17वे तो बस सदा नीचता की रोटी खाते हैं और हिंसा का दाखमधु पीते हैं।

18किन्तु धर्मी का पथ वैसा होता है जैसी प्रात: किरण होती है। जो दिन की परिपूर्णता तक अपने प्रकाश में बढ़ती ही चली जाती है। 19किन्तु पापी का मार्ग सघन,

अन्धकार जैसा होता है। वे नहीं जान पाते कि किससे
टकराते हैं।
[20]हे मेरे पुत्र, जो कुछ मैं कहता हूँ उस पर तू ध्यान
दे। मेरे वचनों को तू कान लगा कर सुन। [21]उन्हें
अपनी दृष्टि से ओझल मत होने दे। अपने हृदय पर तू
उन्हें धरे रह। [22]क्योंकि जो उन्हें पाते हैं उनके लिये
वे जीवन बन जाते हैं और वे एक पुरुष की सम्पूर्ण
काया का स्वास्थ्य बनते हैं।
[23]सबसे बडी बात यह है कि तू अपने विचारों के
बारे में सावधान रह।
क्योंकि तेरे विचार जीवन को नियंत्रण में रखते हैं।
[24]तू अपने मुख से कुटिलता को दूर रख। तू अपने
होठों से भ्रष्ट बात दूर रख। [25]तेरी आँखों के आगे सदा
सीधा मार्ग रहे और तेरी चकचकी आगे ही लगी रहें।
[26]अपने पैरों के लिये तू सीधा मार्ग बना। बस तू उन राहों
पर चल जो निश्चित सुरक्षित हैं। [27]दाहिने को अथवा
बायें को मत डिग। तू अपने चरणों को बुराई से रोके रह।

पराई स्त्री से बचे रह

5 हे मेरे पुत्र, तू मेरी बुद्धिमता की बातों पर ध्यान दे।
मेरे अर्न्तदृष्टि के वचन को लगन से सुन। [2]जिससे
तेरा भले बुरे का बोध बना रहे और तेरे होठों पर
ज्ञान संरक्षित रहे। [3]क्योंकि व्यभिचारिणी के होंठ
मधु टपकाते हैं और उसकी वाणी तेल सी फिसलन
भरी है। [4]किन्तु परिणाम में यह जहर सी कड़ुवी और
दुधारी तलवार सी तेज धार है! [5]उसके पैर मृत्यु के
गर्त कि तरफ बढ़ते हैं और वे सीधे कब्र तक ले जाते
हैं! [6]वह कभी भी जीवन के मार्ग की नहीं सोचती!
उसकी रोहें खोटी हैं! किन्तु, हाय, उसे ज्ञात नहीं!

व्यभिचार विनाश का मूल है

[7]अब मेरे पुत्रों, तुम मेरी बात सुनों। जो कुछ भी मैं
कहता हूँ, उससे मुँह मत मोड़ो। [8]तुम ऐसी राह चलों,
जो उससे सुदूर हो। उसके घर–द्वार के पास तक मत
जाना। [9]नहीं तो तुम अपनी उत्तम शक्ति को दूसरों के
हाथों में दे बैठोगे और अपने जीवन वर्ष किसी ऐसे
को जो क्रूर है। [10]ऐसा न हो, तुम्हारे धन पर अजनबी
मौज करें। तुम्हारा परिश्रम औरों का घर भरे। [11]जब
तेरा माँस और काया चूक जायेंगे तब तुम अपने जीवन
के आखिरी छोर पर रोते बिलखाते यूँ ही रह जाओगे।
[12]और तुम कहोगे, "हाय! अनुशासन से मैंने क्यों बैर
किया? क्यों मेरा मन सुधार की उपेक्षा करता रहा?
[13]मैंने अपने शिक्षकों की बात नहीं मानी अथवा मैंने
अपने प्रशिक्षकों पर ध्यान नहीं दिया। [14]मैं सारी मण्डली
के सामने, महानाश के किनारे पर आ गया हूँ।"

अपनी पत्नी के संग आनन्द मना

[15-16]तू अपने जल–कुंड से ही पानी पिया कर और
तू अपने ही कुँए से स्वच्छ जल पिया कर। तू ही कह,
क्या तेरे जलस्रोत राहों में इधर उधर फैल जायें? और
तेरी जलधारा चौराहों पर फैंले? [17]ये तो बस तेरी हो,
एकमात्र तेरी ही। उनमे कभी किसी अजनबी का
भाग न हो। [18]तेरा स्रोत धन्य रहे और अपने जवानी
की पत्नी के साथ ही तू आनन्दित रह। का रसपान
[19]तेरी वह पत्नी, प्रियतमा, प्राणप्रिया, मनमोहक हिरणी
सी तुझे सदा तृप्त करे। उसके माँसल उरोज और
उसका प्रेम पाश तुझको बाँधे रहे। [20]हे मेरे पुत्र, कोई
व्यभिचारिणी तुझको क्यों बान्ध पाये? और किसी
दूसरे की पत्नी को तू क्यों गले लगाये?
[21]यहोवा तेरी राहें पूरी तरह देखता है और वह
तेरी सभी राहें परखता रहता है। [22]दुष्ट के बुरे कर्म
उसको बान्ध लेते हैं। उसका ही पाप जाल उसको
फँसा लेता है। [23]वह बिना अनुशासन के मर जाता है।
उसके ये बड़े दोष उसको भटकाते हैं।

कोई चूक मत कर

6 हे मेरे पुत्र, बिना समझे बूझे यदि किसी की जमानत
दी है अथवा किसी के लिये वचनबद्ध हुआ है,
[2]यदि तू अपने ही कथन के जाल में फँस गया है, तू
अपने मुख के ही शब्दों के पिंजरे में बन्द हो गया है
[3]तो मेरे पुत्र, क्योंकि तू औरों के हाथों में पड़ गया है,
तू स्वंय को बचाने को ऐसा कर: तू उसके निकट जा
और विनम्रता से अपने पड़ोसो से अनुनय विनम्र कर।
[4]निरन्तर जागता रह, आँखों में नींद न हो और तेरी
पलकों में झपकी तक न आये। [5]स्वंय को चंचल
हिरण शिकारी के हाथ से और किसी पक्षी सा उसके
जाल से छुड़ा ले।

आलसी मत बनों

6अरे ओ आलसी, चींटी के पास जा। उसकी कार्य
विधि देख और उससे सीख ले। 7उसका न तो कोई
नायक है, न ही कोई निरीक्षक न ही कोई शासक है।
8फिर भी वह ग्रीष्म में भोजन बटोरती है और कटनी
के समय खाना जुटाती है।

9अरे ओ दीर्घ सूत्री, कब तक तुम यहाँ पड़े ही
रहोगे? अपनी निद्रा से तुम कब जाग उठोगे? 10तुम
कहते रहोगे–"थोड़ा सा और सो लूँ, एक झपकी ले
लूँ, थोड़ा सुस्ताने को हाथों पर हाथ रख लूँ।" 11और
बस तुझको दरिद्रता एक बटमार सी आ घेरेगी और
अभाव शस्त्रधारी सा घेर लेगा।

दुष्ट जन

12नीच और दुष्ट वह होता है जो बुरी बातें बोलता
हुआ फिरता रहता है। 13जो आँखों द्वारा इशारा करता
है और अपने पैरों से संकेत देता है और अपनी
उगंलियो से इशारे करता है। 14जो अपने मन में षड़यन्त्र
रचता है और जो सदा अनबन उपजाता रहता है।
15अत: उस पर अचानक महानाश गिरेगा और
तत्काल वह नष्ट हो जायेगा। उस के पास बचने का
उपाय भी नहीं होगा।

वे सात* बातें जिन्हें यहोवा घृणा करता है

16ये हैं छ: बातें वे जिनसे यहोवा घृणा रखता और
ये ही सात बातें जिनसे है उसको बैर:

17 गर्वीली आँखें, झूठ से भरी वाणी,
वे हाथ जो अबोध के हत्यारे हैं।
18 ऐसा हृदय जो कुचक्र भरी योजनाएँ रचता रहता है,
ऐसे पैर जो पाप के मार्ग पर तुरन्त दौड़ पड़ते हैं।
19 वह झूठा गवाह, जो निरन्तर झूठ उगलता है और
ऐसा व्यक्ति जो भाईयों के बीच फूट डाले।

दुराचार के विरुद्ध चेतावनी

20हे मेरे पुत्र, अपने पिता की आज्ञा का पालन
कर और अपनी माता की सीख को कभी मत त्याग।
21अपने हृदय पर उनको सदैव बाँध रह और उन्हें
अपने गले का हार बना ले। 22जब तू आगे बढ़ेगा, वे
राह दिखायेंगे। जब तू सो जायेगा, वे तेरी रखवाली
करेंगे और जब तू जागेगा, वे तुझसे बातें करेंगे।

23क्योंकि ये आज्ञाएँ दीपक हैं और यह शिक्षा एक
ज्योति है। अनुशासन के सुधार तो जीवन का मार्ग है।
24जो तुझे चरित्रहीन स्त्री से और भटकी हुई कुलटा
की फुसलाती बातों से बचाते हैं। 25तू अपने मन को
उसकी सुन्दरता पर कभी वासना सक्त मत होने दे
और उसकी आँखों का जादू मत चढ़ने दे। 26क्योंकि
वह वेश्या तो तुझको रोटी–रोटी का मुहताज कर
देगी किन्तु वह कुलटा तो तेरा जीवन ही हर लेगी!

27क्या यह सम्भव है कि कोई किसी के गोद में
आग रख दे और उसके वस्त्र फिर भी जरा भी न
जलें? 28दहकते अंगारों पर क्या कोई जन अपने पैरों
को बिना झुलसाये हुए चल सकता है? 29वह मनुष्य
ऐसा ही है जो किसी अन्य की पत्नी से समागम करता
है। ऐसी पर स्त्री के जो भी कोई छूएगा, वह बिना दण्ड
पाये नहीं रह पायेगा।

30–31यदि कोई चोर कभी भूखों मरता हो, यदि
यह भूख को मिटाने के लिये चोरी करे तो लोग उस
से घृणा नहीं करेंगे। फिर भी यदि वह पकड़ा जाये तो
उसे सात गुणा* भरना पड़ता है चाहे उससे उसके घर
का समूचा धन चुक जाये।

32किन्तु जो पर स्त्री से समागम करता है उसके पास
तो विवेक का अभाव है। ऐसा जो करता है वह स्वयं
को मिटाता है। 33प्रहार और अपमान उसका भाग्य है।
उसका कलंक कभी नहीं धुल पायेगा। 34ईर्ष्या किसी
पति का क्रोध जगाती है और जब वह इसका बदला
लेगा तब वह उस पर दया नहीं करेगा। 35वह कोई क्षति
पूर्ति स्वीकार नहीं करेगा और कोई उसे कितना ही
बड़ा प्रलोभन दे, उसे वह स्वीकारे बिना ठुकरायेगा!

सात 'नीति वचन' में अथवा और भी कहीं, जहाँ 'सात' संख्या का प्रयोग किया गया है वहाँ इसका अर्थ कोई निश्चित संख्या नहीं है, बल्कि इसका अर्थ है बहुत अधिक और इसी तरह जहाँ कहा गया है। "सात नहीं बल्कि आठ" वहाँ उसका अर्थ है अधिक से भी और अधिक।

सात गुणा यहाँ सात गुणा से अभिप्राय है बहुत अधिक या कई कई बार।

विवेक दुराचार से बचाता है

7 हे मेरे पुत्र, मेरे वचनों को पाल और अपने मन में मेरे आदेश संचित कर। 2मेरे आदेशों का पालन करता रहा तो तू जीवन पायेगा। तू मेरे उपदेशों को अपनी आँखों की पुतली सरीखा सम्भाल कर रख। 3उनको अपनी उंगलियों पर बाँध ले, तू अपने हृदय पटल पर उनको लिख ले। 4बुद्धि से कह– “तू मेरी बहन है” और तू समझ बूझ को अपनी कुटुम्बी जन कह। 5वे ही तुझको उस कुलटा से और स्वेच्छाचारिणी पत्नी के लुभावनें वचनों से बचायेंगे।

6एक दिन मैंने अपने घर की खिड़की के झरोखे से झाँका, 7सरल युवकों के बीच एक ऐसा नवयुवक देखा जिसको भले–बुरे की पहचान नहीं थी। 8वह उसी गली से होकर, उसी कुलटा के नुक्कड़ के पास से जा रहा था। वह उसके ही घर की तरफ बढ़ता जा रहा था। 9सूरज शाम के धुंधलके में डूबता था, रात के अन्धेरे की तहें जमती जाती थी। 10तभी कोई कामिनी उससे मिलने के लिये निकल कर बाहर आई। वह वेश्या के वेश में सजी हुई थी। उसकी इच्छाओ में कपट छुपा था। 11वह वाचाल और निरंकुश थी। उसके पैर कभी घर में नहीं टिकते थे। 12वह कभी–कभी गलियों में, कभी चौराहों पर, और हर किसी नुक्कड़ पर घात लगाती थी। 13उसने उसे रोक लिया और उसे पकड़ा। उसने उसे निर्लज्ज मुख से चूम लिया, फिर उससे बोली, 14“आज मुझे मैत्री भेंट अर्पित करनी थी। मैंने अपनी मन्नत पूरी कर ली है। मैंने जो प्रतिज्ञा की थी, दे दिया है। उसका कुछ भाग मैं घर ले जा रही हूँ। अब मेरे पास बहुतेरे खाने के लिये है! 15इसलिये मैं तुझसे मिलने बाहर आई। मैं तुझे खोजती रही और तुझको पा लिया। 16मैंने मिस्र के मलमल की रंगों भरी चादर से सेज सजाई है। 17मैंने अपनी सेज को गंधरस, दालचीनी और अगर गंध से सुगन्धित किया है। 18तू मेरे पास आ जा। भोर की किरण चूर हुए, प्रेम की दाखमधु पीते रहे। आ, हम परस्पर प्रेम से भोग करें। 19मेरे पति घर पर नहीं है। वह दूर यात्रा पर गया है। 20वह अपनी थैली धन से भर कर ले गया है और पूर्णमासी तक घर पर नहीं होगा।”

21उसने उसे लुभावने शब्दों से मोह लिया। उसको मीठी मधुर वाणी से फुसला लिया। 22वह तुरन्त उसके पीछे ऐसे हो लिया जैसे कोई बैल वध के लिये खिंचा चला जाये। जैसे कोई निरा मूर्ख जाल में पैर धरे। 23जब तक एक तीर उसका हृदय नहीं बेधेगा तब तक वह उस पक्षी सा जाल पर बिना यह जाने टूट पडेगा कि जाल उसके प्राण हर लेगा।

24 सो मेरे पुत्रों, अब मेरी बात सुनो और जो कुछ मैं कहता हूँ उस पर ध्यान धरो। 25 अपना मन कुलटा की राहों में मत खिंचने दो अथवा उसे उसके मार्गो पर मत भटकने दो। 26 कितने ही शिकार उसने मार गिरायें है। उसने जिनको मारा उनका जमघट बहुत बड़ा है। 27उस का घर वह राजमार्ग है जो कब्र को जाता है और नीचे मृत्यु की कालकोठरी में उतरता है!

सुबुद्धि की पुकार

8 क्या सुबुद्धि तुझको पुकारती नहीं है?
क्या समझबूझ ऊँची आवाज नहीं देती?
2 वह राह के किनारे ऊँचे स्थानों पर
खड़ी रहती है जहाँ मार्ग मिलते हैं।
3 वह नगर को जाने वाले द्वारों के सहारे
उपर सिंह द्वार के ऊपर पुकार कर कहती है,
4 “हे लोगों, मैं तुमको पुकारती हूँ,
मैं सारी मानव जाति हेतु आवाज़ उठाती हूँ।
5 अरे भोले लोगों! दूर दृष्टि प्राप्त करो,
तुम, जो मूर्ख बने हो, समझ बूझ अपनाओ।
6 सुनो! क्योंकि मेरे पास कहने को उत्तम बातें है,
अपना मुख खोलती हूँ, जो कहने को उचित है।
7 मेरे मुख से तो वही निकलता है जो सत्य है,
क्योंकि मेरे होंठों को दुष्टता से घृणा है।
8 मेरे मुख के सभी शब्द न्यायापूर्ण होते है
कोई भी कुटिल, अथवा भ्रान्त नहीं है ।
9 विचारशील जन के लिए वे सब साफ़ साफ़ है
और ज्ञानी जन के लिए वे सब दोष रहित है।
10 चाँदी नहीं बल्कि तू मेरी शिक्षा ग्रहण कर
उत्तम स्वर्ण नहीं बल्कि तू ज्ञान ले।
11 सुबुद्धि, रत्नों,मणि माणिकों से अधिक मूल्यवान है।
तेरी ऐसी मनचाही कोई वस्तु
जिससे उसकी तुलना हो।”
12 “मैं सुबुद्धि, विवेक के संग रहती हूँ
मैं ज्ञान रखती हूँ, और भले–बुरे का
भेद जानती हूँ।

13 यहोवा का डरना, पाप से घृणा करना है।
गर्व और अहंकार, कुटिल व्यवहार और
पतनोन्मुख बातों से मैं घृणा करती हूँ ।
14 मेरे परामर्श और न्याय उचित होते हैं।
मेरे पास समझ–बूझ और सामर्थ्य है।
15 मेरे ही सहारे राजा राज्य करते हैं,
और शासक नियम रचते है, जो न्याय पूर्ण है।
16 मेरी ही सहायता से धरती के सब
महानुभाव शासक राज चलाते है।
17 जो मुझसे प्रेम करते हैं, मैं भी उन्हें प्रेम करती हूँ,
मुझे जो खोजते हैं, मुझको पा लेते हैं।
18 सम्पत्तियाँ और आदर मेरे साथ हैं।
मैं खरी सम्पत्ति और यश देती हूँ।
19 मेरा फल स्वर्ण से उत्तम है।
मैं जो उपजाती हूँ, वह शुद्ध चाँदी से अधिक है।
20 मैं न्याय के मार्ग के सहारे
नेकी की राह पर चलती रहती हूँ।
21 मुझसे जो प्रेम करते उन्हें मैं धन देती हूँ,
और उनके भण्डार भर देती हूँ।
22 यहोवा ने मुझे अपनी रचना के प्रथम
अपने पुरातन कर्मो से पहले ही रचा है
23 मेरी रचना सनातन काल से हुई।
आदि से, जगत की रचना के पहले से हुई।
24 जब सागर नहीं थे, जब जल से लबालब
सोते नहीं थे, मुझे जन्म दिया गया।
25 मुझे पर्वतों–पहाड़ियों की स्थापना से
पहले ही जन्म दिया गया।
26 धरती की रचना, या उसके खेत
अथवा जब धरती के, धूल कण रचे गये।
27 मेरा अस्तित्व उससे भी पहले वहाँ था।
जब उसने आकाश का वितान ताना था
और उसने सागर के दूसरे छोर पर
क्षितिज को रेखांकित किया था।
28 उसने जब आकाश में सघन मेघ टिकाये थे ,
और गहन सागर के स्रोत निर्धारित किये,
29 उसने समुद्र की सीमा बांधी थी
जिससे जल उसकी आज्ञा कभी न लाँघे,
धरती की नीवों का सूत्रपात उसने किया,
30 तब मैं उसके साथ कुशल शिल्पी सी थी।
मैं दिन–प्रतिदिन आनन्द से परिपूर्ण
होती चली गयी।
उसके सामने सदा आनन्द मनाती ।
31 उसकी पूरी दुनिया से मैं आनन्दित थी।
मेरी खुशी समूची मानवता थी।
32 तो अब, मेरे पुत्रों, मेरी बात सुनो।
वो धन्य है! जो जन मेरी राह पर चलते है।
33 मेरे उपदेश सुनो और बुद्धिमान बनो ।
इनकी उपेक्षा मत करो।
34 वही जन धन्य है, जो मेरी बात सुनता
और रोज मेरे द्वारों पर दृष्टि लगाये रहता एंव
मेरी ड्योढ़ी पर बाट जोहता रहता है।
35 क्योंकि जो मुझको पा लेता वही जीवन पाता
और वह यहोवा का अनुग्रह पाता है।
36 किन्तु जो मुझको, पाने में चूकता,
वह तो अपनी ही हानि करता है।
मुझसे जो भी जन सतत बैर रखते हैं,
वे जन तो मृत्यु के प्यारे बन जाते है!"

सुबुद्धि और दुर्बुद्धि

9 सुबुद्धि ने अपना घर बनाया है। उसने अपने सात
खम्भे गढ़े हैं। 2उसने अपना भोजन तैयार किया
और मिश्रित किया अपना दाखमधु अपनी खाने की
मेज पर सजा ली है। 3और अपनी दासियों को नगर
के सर्वोच्च स्थानों से बुलाने को भेजा है। 4"जो भी
भोले भाले है, यहाँ पर पधारे।" जो विवेकी नहीं, वह
उनसे यह कहती है, 5"आओ, मेरा भोजन करो, और
मिश्रित किया हुआ मेरा दाखमधु पिओ। 6तुम अपनी
दुर्बुद्धि के मार्ग को छोड़ दो, तो जीवित रहोगे। तुम
समझ–बूझ के मार्ग पर आगे बढ़ो।"
7जो कोई उपहास करने वाले को, सुधारता है, अपमान
को बुलाता है, और जो किसी नीच को समझाने डांटे
वह गाली खाता हैं। 8हँसी उड़ानेवाले को तुम कभी मत
डाँटों, नहीं तो वह तुमसे ही घृणा करने लगेगा। किन्तु
यदि तुम किसी विवेकी को डाँटो, तो वह तुमसे प्रेम ही
करेगा। 9बुद्धिमान को प्रबोधो, वह अधिक बुद्धिमान होगा,
किसी धर्मी को सिखाओ, वह अपनी ज्ञान वृद्धि करेगा।
10यहोवा का आदर करना सुबुद्धि को हासिल करना
का पहिला कदम है, यहोवा का ज्ञान प्राप्त करना समझ बूझ

को पाने का पहले कदम है। 11क्योंकि मेरे द्वारा ही तेरी
आयु बढ़ेगी, तेरे दिन बढ़ेंगे, और तेरे जीवन में वर्ष
जुड़ते जायेंगे। 12"यदि तू बुद्धिमान है, सदबुद्धि तुझे प्रतिफल
देगी। यदि तू उच्छृंखल है, तो अकेला कष्ट पायेगा।
13दुर्बुद्धि ऐसी स्त्री है जो बाते बनाती और अनुशासन
नहीं मानती। उसके पास ज्ञान नहीं है। 14अपने घर
के दरवाजे पर वह बैठी रहती है, नगर के सर्वोच्च
बिंदु पर वह आसन जमाती है। 15वहाँ से जो गुज़रते
वह उनसे पुकार कहती, जो सीधे-सीधे अपनी ही
राह पर जा रहे; 16"अरे निर्बुद्धियों! तुम चले आओ
भीतर" वह उनसे यह कहती है जिनके पास भले बुरे
का बोध नहीं है, 17"चोरी का पानी तो, मीठा-मीठा
होता है, छिप कर खाया भोजन, बहुत स्वाद देता है।"
18किन्तु वे यह नहीं जानते कि वहाँ मृतकों का
वास होता है और उसके मेहमान कब्र में समाये हैं!

सुलैमान की सूक्तियाँ

10 एक बुद्धिमान पुत्र अपने पिता को आनन्द देता है
किन्तु एक मूर्ख पुत्र, माता का दुःख होता है।
2बुराई से कमाये हुए धन के कोष सदा व्यर्थ रहते
हैं! जबकि धार्मिकता मौत से छुड़ाती है।
3किसी नेक जन को यहोवा भूखा नहीं रहने देगा,
किन्तु दुष्ट की लालसा पर पानी फेर देता है।
4सुस्त हाथ मनुष्य को दरिद्र कर देते हैं, किन्तु
परिश्रमी हाथ सम्पत्ति लाते हैं।
5गर्मियों में जो उपज को बटोर रखता है, वही पुत्र
बुद्धिमान है; किन्तु जो कटनी के समय में सोता है
वह पुत्र शर्मनाक होता है।
6धर्मी जनों के सिर आशीषों का मुकुट होता किन्तु
दुष्ट के मुख से हिंसा ऊफन पड़ती।
7धर्मी का वरदान स्मरण मात्र बन जाय; किन्तु
दुष्ट का नाम दुर्गन्ध देगा।
8वह आज्ञा मानेगा जिसका मन विवेकशील है,
जबकि बकवासी मूर्ख नष्ट हो जायेगा।
9विवेकशील व्यक्ति सुरक्षित रहता है, किन्तु टेढ़ी
चाल वाले का भण्डा फूटेगा।
10जो बुरे इरादे से आंख से इशारा करे, उसको तो
उससे दुःख ही मिलेगा। और बकवासी मूर्ख नष्ट हो जायेगा।
11धर्मी का मुख तो जीवन का स्रोत होता है, किन्तु
दुष्ट के मुख से हिंसा ऊफन पड़ती है।
12दुष्ट के मुख से घृणा भेद-भावों को उत्तेजित
करती है जबकि प्रेम सब दोषों को ढक लेता है।
13 बुद्धि का निवास सदा समझदार होठों पर होता
है, किन्तु जिसमें भले बुरे का बोध नहीं होता, उसके
पीठ पर डंडा होता है।
14बुद्धिमान लोग, ज्ञान का संचय करते रहते, किन्तु
मूर्ख की वाणी विपत्ति को बुलाती है ।
15धनिक का धन, उनका मज़बूत किला होता,
दीन की दीनता पर उसका विनाश है।
16नेक की कमाई, उन्हें जीवन देती है, किन्तु दुष्ट
की आय दण्ड दिलवाती।
17ऐसे अनुशासन से जो जन सीखता है, जीवन के
मार्ग की राह वह दिखाता है। किन्तु जो सुधार की
उपेक्षा करता है ऐसा मनुष्य तो भटकाया करता है।
18जो मनुष्य बैर पर परदा डाले रखता है, वह
मिथ्यावादी है और वह जो निन्दा फैलाता है, मूढ़ है।
19अधिक बोलने से, कभी पाप नहीं दूर होता किन्तु
जो अपनी जुबान को लगाम देता है, वही बुद्धिमान है।
20धर्मी की वाणी विशुद्ध चाँदी है, किन्तु दुष्ट के
हृदय का कोई नहीं मोल।
21धर्मी के मुख से अनेक का भला होता, किन्तु
मूर्ख समझ के अभाव में मिट जाते।
22यहोवा के वरदान से जो धन मिलता है, उसके
साथ वह कोई दुःख नहीं जोड़ता।
23बुरे आचार में मूढ़ को सुख मिलता, किन्तु एक
समझदार विवेक में सुख लेता है।
24जिससे मूढ़ भयभीत होता, वही उस पर आ पड़ेगी,
धर्मी की कामना तो पूरी की जायेगी।
25आंधी जब गुजरती है, दुष्ट उड़ जाते हैं, किन्तु
धर्मी जन तो, निरन्तर टिके रहते हैं।
26काम पर जो किसी आलसी को भेजता है, वह
बन जाता है जैसे अम्ल सिरका दांतों को खटाता है,
और धुंआ आँखों को तड़पाता दुःख देता है।
27यहोवा का भय आयु का आयाम बढ़ाता है, किन्तु
दुष्ट की आयु तो घटती ही रहती है।
28धर्मी का भविष्य आनन्द-उल्लास है। किन्तु दुष्ट
की आशा तो व्यर्थ रह जाती है।

29धर्मी जन के लिये यहोवा का मार्ग शरण स्थल है किन्तु जो दुराचारी है, उनका यह विनाश है।
30धर्मी जन को कभी उखाड़ा न जायेगा, किन्तु दुष्ट धरती पर टिक नहीं पायेगा।
31धर्मी के मुख से बुद्धि प्रवाहित होती है, किन्तु कुटिल जीभ को तो काट फेंका जायेगा।
32धर्मी के अधर जो उचित है जानते हैं, किन्तु दुष्ट का मुख बस कुटिल बातें बोलता।

11 यहोवा छल के तराजू से घृणा करता है, किन्तु उसका आनन्द सही नाप–तौल है।
2अभिमान के संग ही अपमान आता है, किन्तु नम्रता के साथ विवेक आता है।
3नेकों की नेकी उनकी अगुवाई करती है, किन्तु दुष्टों को दुष्टता ही ले डूबेगी।
4कोप के दिन धन व्यर्थ रहता, काम नहीं आता है; किन्तु तब नेकी लोगों को मृत्यु से बचाती है।
5नेकी निर्दोषों के हेतु मार्ग सरल–सीधा बनाती है, किन्तु दुष्ट जन को उसकी अपनी ही दुष्टता धूलें चटा देती।
6नेकी सज्जनों को छुड़वाती है, किन्तु विश्वासहीन बुरी इच्छाओं के जाल में फँस जाते है।
7जब दुष्ट मरता है, उसकी आशा मर जाती है। अपनी शक्ति से जो कुछ अपेक्षा उसे थी, व्यर्थ चली जाती है।
8धर्मी जन तो विपत्ति से छुटकारा पा लेता है, जबकि उसके बदले वह दुष्ट पर आ पड़ती है।
9भक्तिहीन की वाणी अपने पड़ौसी को ले डूबती है, किन्तु ज्ञान द्वारा धर्मी जन तो बच निकलता है।
10धर्मी का विकास नगर को आनन्दित करता जबकि दुष्ट का नाश हर्ष–नाद उपजाता।
11सच्चे जन की आशीष नगर को ऊँचा उठा देती किन्तु दुष्टों की बातें नीचे गिरा देती हैं।
12ऐसा जन जिसके पास विवेक नहीं होता, वह अपने पड़ोसी का अपमान करता है, किन्तु समझदार व्यक्ति चुप चाप रहता है।
13जो चतुरायी करता फिरता है, वह भेद प्रकट करता है, किन्तु विश्वासी जन भेद को छिपाता है।
14जहाँ मार्ग दर्शन नहीं वहाँ राष्ट्र पतित होता, किन्तु बहुत सलाहकार विजय को सुनिश्चित करते हैं।
15 जो अनजाने का जामिन बनता है, वह निश्चय ही पीड़ा उठायेगा, किन्तु अपने हाथों को बंधक बनाने से जो मना कर देता है, वह सुरक्षित रहता है।
16दयालु स्त्री तो आदर पाती है जबकि क्रूर जन का लाभ केवल धन है।
17दयालु मनुष्य स्वयं अपना भला करता है, जबकि दया हीन स्वयं पर विपत्ति लाता है।
18दुष्ट जन कपट भरी रोजी कमाता है, किन्तु जो नेकी को बोता रहता है, उसको तो सुनिश्चित प्रतिफल का पाना है।
19सच्चा धर्मी जन जीवन पाता है, किन्तु जो बुराई को साधता रहता वह तो बस अपनी मृत्यु को पहुँचता है।
20कुटिल जनों से, यहोवा घृणा करता है किन्तु वह उनसे प्रसन्न होता है जिनके मार्ग सर्वदा सीधे होते है।
21यह जानो निश्चित है, दुष्ट जन कभी दंड से नहीं बचेगा। किन्तु जो नेक है वे छूट जायेंगे।
22जो भले बुरे में भेद नहीं करती, उस स्त्री की सुन्दरता ऐसी है जैसे किसी सुअर की थुथनी में सोने की नथ।
23नेक की इच्छा का भलाई में अंत होता है, किन्तु दुष्ट की आशा रोष में फैलती है।
24जो उदार मुक्त भाव से दान देता है, उसका लाभ तो सतत बढ़ता ही जाता है, किन्तु जो अनुचित रूप से सहेज रखते, उनका तो अंत बस दरिद्रता होता ।
25उदार जन तो सदा, फूलेगा फलेगा और जो दूसरों की प्यास बुझायेगा उसकी तो प्यास अपने आप ही बुझेगी।
26अन्न का जमाखोर लोगों की गाली खाता, किन्तु जो उसे बेचने को राजी होता है उसके सिर वरदान का मुकुट से सजता है।
27जो भलाई पाने को जतन करता है वही यश पाता है किन्तु जो बुराई के पीछे पड़ा रहता उसके तो हाथ बस बुराई ही लगती है।
28जो कोई निज धन का भरोसा करता है, झड़ जायेगा वह निर्जीव सूखे पत्ते सा; किन्तु धर्मी जन नयी हरी कोपल सा हरा–भरा ही रहेगा।
29जो अपने घराने पर विपत्ति लायेगा, दान में उसे वायु मिलेगा और मूर्ख, बुद्धिमान का दास बनकर रहेगा।
30धर्मी का कर्म–फल "जीवन का वृक्ष" है, और जो जन मनों को जीत लेता है, वही बुद्धिमान है।
31यदि इस धरती पर धर्मी जन अपना उचित

प्रतिफल पाते हैं, तो फिर पापी और परमेश्वर विहीन
लोग कितना अपने कुकर्मो का फल यहाँ पायेंगे।

12 जो शिक्षा और अनुशासन से प्रेम करता है,
वह तो ज्ञान से प्रेम यूँ ही करता है। किन्तु
जो सुधार से घृणा करता है, वह तो निरा मूर्ख है।
2सज्जन मनुष्य यहोवा की कृपा पाता है, किन्तु
छल छंदी को यहोवा दण्ड देता है।
3दुष्टता, किसी जन को स्थिर नहीं कर सकती
किन्तु धर्मी जन कभी उखड़ नहीं पाता है।
4एक उत्तम पत्नी के साथ पति खुश और गर्वीला
होता है। किन्तु वह पत्नी जो अपने पति को लजाती है
वह उसको शरीर की बीमारी जैसे होती है।
5धर्मी की योजनाएँ न्याय संगत होती हैं जबकि दुष्ट
की सलाह कपटपूर्ण रहती है।
6दुष्ट के शब्द घात में झपटने की रहते है। किन्तु
सज्जन की वाणी उनको बचाती है।
7जो खोटे होते हैं उखाड़ फेंके जाते हैं, किन्तु खरे
जन का घराना टिका रहता है।
8व्यक्ति अपनी भली समझ के अनुसार प्रशंसा पाता
है, किन्तु ऐसे जन जिनके मन कुपथ गामी हों घृणा
के पात्र होते हैं।
9सामान्य जन बनकर परिश्रम करना उत्तम है इसके
की भूखे रहकर महत्वपूर्ण जन सा स्वांग भरना।
10धर्मी अपने पशु तक की जरूरतों का ध्यान रखता
है, किन्तु दुष्ट के सर्वाधिक दया भरे काम भी कठोर
क्रूर रहते हैं।
11जो अपने खेत में काम करता है उसके पास
खाने की बहुतायत होंगी; किन्तु पीछे भागता रहता जो
ना समझ के उसके पास विवेक का अभाव रहता है।
12दुष्ट जन पापियों की लूट को चाहते हैं, किन्तु
धर्मी जन की जड़ हरी रहती है।
13पापी मनुष्य को पाप उसका अपना ही
शब्द–जाल में फँसा लेता है। किन्तु खरा व्यक्ति विपत्ति
से बच निकलता।
14अपनी वाणी के सुफल से व्यक्ति श्रेष्ठ वस्तुओ से
भर जाता है। निश्चय यह उतना ही जितना अपने
हाथों का काम करके उसको सफलता देता है।
15मूर्ख को अपना मार्ग ठीक जान पड़ता है, किन्तु
बुद्धिमान व्यक्ति सन्मति सुनता है।
16मूर्ख जन अपनी झुंझलाहट झटपट दिखाता है
किन्तु बुद्धिमान अपमान की उपेक्षा करता है।
17सत्यपूर्ण साक्षी खरी गवाही देता है, किन्तु झूठा
साक्षी झूठी बातें बनाता है।
18अविचारित वाणी तलवार सी छेदती, किन्तु
विवेकी की वाणी घावों को भरती है।
19सत्यपूर्ण वाणी सदा सदा टिकी रहती है, किन्तु
झूठी जीभ बस क्षण भर को टिकती है।
20उनके मनों में छल–कपट भरा रहता है, जो
कुचक्र भरी योजना रचा करते है। किन्तु जो शान्ति
को बढ़ावा देते हैं, आनन्द पाते है।
21धर्मी जन पर कभी विपत्ति नहीं गिरेगी, किन्तु
दुष्टों को तो विपत्तियाँ घेरेंगी।
22ऐसे होठों को यहोवा घृणा करता है जो झूठ बोलते
हैं किन्तु उन लोगों से जो सत्य से पूर्ण है, वह प्रसन्न
रहता है।
23ज्ञानी अधिक बोलता नहीं है, चुप रहता है किन्तु
मूर्ख अधिक बोल बोलकर अपने अज्ञान को दर्शाता है।
24परिश्रमी हाथ तो शासन करेंगे, किन्तु आलस्य
का परिणाम बेगार होगा।
25चिंतापूर्ण मन व्यक्ति को दबोच लेता है; किन्तु
भले वचन उसे हर्ष से भर देते हैं।
26धर्मी मनुष्य मित्रता में सतर्क रहता है, किन्तु
दुष्टों की चाल उन्हीं को भटकाती है।
27आलसी मनुष्य निज शिकार ढूँढ नहीं पाता किन्तु
परिश्रमी जो कुछ उसके पास है, उसे आदर देता है।
28नेकी के मार्ग में जीवन रहता है, और उस राह
के किनारे अमरता बसती है।

13 समझदार पुत्र निज पिता की शिक्षा पर कान
देता, किन्तु उच्छृंखल झिड़की पर भी ध्यान
नहीं देता। 2सज्जन अपनी वाणी के सुफल का आनन्द
लेता हैं किन्तु दुर्जन तो सदा हिंसा चाहता है।
3जो अपनी वाणी के प्रति चौकस रहता है, वह
अपने जीवन की रक्षा करता है। पर जो गाल बजाता
रहता है, अपने विनाश को प्राप्त करता है।
4आलसी मनोरथ पालता है पर कुछ नहीं पाता, किन्तु
परिश्रमी की जितनी भी इच्छा है, पूर्ण हो जाती है।
5धर्मी उससे घृणा करता है, जो झूठ है जबकि दुष्ट
लज्जा और अपमान लाते हैं।

6सच्चरित्र जन की रक्षक नेकी है जबकि बदी पापी को, उलट फेंक देती है।

7एक व्यक्ति जो धनिक का दिखावा करता है; किन्तु उसके पास कुछ भी नहीं होता है। और एक अन्य जो दरिद्र का सा आचरण करता किन्तु उसके पास बहुत धन होता है।

8धनवान को अपना जीवन बचाने उसका धन फिरौती में लगाना पड़गा किन्तु दीन जन ऐसे किसी धमकी के भय से मुक्त है।

9धर्मी का तेज बहुत चमचमाता किन्तु दुष्ट का दीया* बुझा दिया जाता है।

10अहंकार केवल झगड़ों को पनपाता है किन्तु जो सम्मति की बात मानते है, उनमें ही विवेक पाया जाता है।

11बेइमानी का धन यूँ ही धूल हो जाता है किन्तु जो बूँद-बूँद करके धन संचित करता है, उसका धन बढ़ता है।

12आशा हीनता मन को उदास करती है, किन्तु कामना की पूर्ति प्रसन्नता होती है।

13 जो जन शिक्षा का अनादर करता है, उसको इसका मूल्य चुकाना पड़ेगा। किन्तु जो शिक्षा का आदर करता है, वह तो इसका प्रतिफल पाता है।

14विवेक की शिक्षा जीवन का उद्‌गम स्रोत है, वह लोगों को मौत के फंदे से बचाती है।

15अच्छी भली समझ बूझ कृपा दृष्टि अर्जित करती, पर विश्वास हीन का जीवन कठिन होता है।

16हर एक विवेकी ज्ञानपूर्वक काम करता, किन्तु एक मूर्ख निज मूर्खता प्रकट करता है।

17कुटिल सन्देशवाहक विपत्ति में पड़ता है, किन्तु विश्वसनीय दूत शांति देता है।

18 ऐसा मनुष्य जो शिक्षा की उपेक्षा करता है, उसपर लज्जा और दरिद्रता आ पड़ती है, किन्तु जो शिक्षा पर कान देता है, वह आदर पाता है।

19किसी इच्छा का पूरा हो जाना मन को मधुर लगता है किन्तु दोष का त्याग, मूर्खो को नहीं भाता है।

20बुद्धिमान की संगति, व्यक्ति को बुद्धिमान बनाता है। किन्तु मूर्खो का साथी नाश हो जाता है।

21दुर्भाग्य पापियों का पीछा करता रहता है किन्तु नेक प्रतिफल में खुशहाली पाते है।

22सज्जन अपने नाती-पोतों को धन सम्पति छोड़ता है जबकि पापी का धन धर्मियों के निमित्त संचित होता रहता है।

23दीन जन का खेत भरपूर फसल देता है, किन्तु अन्याय उसे बुहार ले जाता है।

24जो अपने पुत्र को कभी नहीं दण्डित करता, वह अपने पुत्र से प्रेम नहीं रखता है। किन्तु जो प्रेम करता निज पुत्र से, वह तो उसे यत्न से अनुशासित करता है।

25धर्मी जन, मन से खाते और पूर्ण तृप्त होते है किन्तु दुष्ट का पेट तो कभी नहीं भरता है।

14 बुद्धिमान स्त्री अपना घर बनाती है किन्तु मूर्ख स्त्री अपने ही हाथों से अपना घर उजाड़ देती है।

2जिसकी राह सीधी-सच्ची हो, आदर के साथ वह यहोवा से डरता है, किन्तु वह जिसकी राह कुटिल है, यहोवा से घृणा करता है।

3मूर्ख की बातें उसकी पीठ पर डँडे पड़वाती है। किन्तु बुद्धिमान की वाणी रक्षा करती है।

4जहां बैल नहीं होते, खलिहान खाली रहते है, बैल के बल पर ही भरपूर फसल होती है।

5एक सच्चा साक्षी कभी नहीं छलता है किन्तु झूठा गवाह, झूठ उगलता रहता है ।

6उच्छृंखल बुद्धि को खोजता रहता है फिर भी नहीं पाता है; किन्तु भले-बुरे का बोध जिसको रहता है, उसके पास ज्ञान सहज में ही आता है।

7मूर्ख की संगत से दूरी बनाये रख, क्योंकि उसकी वाणी में तू ज्ञान नहीं पायेगा।

8ज्ञानी जनों का ज्ञान इसी में है, कि वे अपनी राहों का चिंतन करें, मूर्खता मूर्ख की छल में बसती है।

9पाप के विचारों पर मूर्ख लोग हँसते है, किन्तु सज्जनों में सद्‌भाव बना रहता है।

10हर मन अपनी निजी पीड़ा को जानता है, और उसका दुःख कोई नहीं बांट पाता है।

11दुष्ट के भवन को ढहा दिया जायेगा, किन्तु सज्जन का डेरा फूलेगा फलेगा।

12ऐसी भी राह होती है जो मनुष्य को उचित जान पड़ती है; किन्तु परिणाम में वह मृत्यु को ले जाती।

दुष्ट का दीया यह एक हिब्रू मुहावरा है जिसका अर्थ है अकाल मृत्यु। देखें निर्गमन 20:12

[13]हँसते हुए भी मन रोता रह सकता है, और आनन्द दु:ख में बदल सकता है।

[14]विश्वासहीन को, अपने कुमार्गो का फल भुगतना पड़ेगा; और सज्जन सुमार्गो का प्रतिफल पायेगा ।

[15]सरल जन सब कुछ का विश्वास कर लेता है। किन्तु विवेकी जन सोच–समझकर पैर रखता है।

[16]बुद्धिमान मनुष्य यहोवा से डरता है और पाप से दूर रहता है। किन्तु मूर्ख मनुष्य बिना विचार किये उतावला होता है– वह सावधान नहीं रहता।

[17]ऐसा मनुष्य जिसे शीघ्र क्रोध आता है, वह मूर्खतापूर्ण काम कर जाता है और वह मनुष्य जो छल–छंदी होता है वह तो घृणा सब ही की पाता है।

[18]सीधे जनों को बस मूढ़ता मिल पाती किन्तु बुद्धिमान के सिर ज्ञान का मुकुट होता है।

[19]दुर्जन सज्जनों के सामने सिर झुकायेंगे, और दुष्ट सज्जन के द्वार माथा नवायेंगे।

[20]गरीब को उसके पड़ोसी भी दूर रखते हैं; किन्तु धनी जन के मित्र बहुत होते हैं।

[21]जो अपने पड़ोसी को तुच्छ मानता है वह पाप करता है किन्तु जो गरीबों पर दया करता है वह जन धन्य है।

[22]ऐसे मनुष्य जो षड़यन्त्र रचते है क्या भटक नहीं जाते? किन्तु जो भली योजनाएँ रचते हैं, वे जन तो प्रेम और विश्वास पाते हैं।

[23]परिश्रम के सभी काम लाभ देते है, किन्तु कोरी बकवाद बस हानि पहुँचाती है।

[24]विवेकी को प्रतिफल में धन मिलता है पर मूर्खो की मूर्खता मूढ़ता देती है।

[25]एक सच्चा साक्षी अनेक जीवन बचाता है , पर झूठा गवाह, कपट पूर्ण होता है।

[26]ऐसा मनुष्य जो यहोवा से डरता है, उसके पास, एक संरक्षित गढ़ी होती है। और वहीं उसके बच्चों को शरण मिलती है।

[27]यहोवा का भय जीवन स्रोत होता है, वह व्यक्ति को मौत के फंदे से बचाता है।

[28]विस्तृत विशाल प्रजा राजा की महिमा हैं, किन्तु प्रजा बिना राजा नष्ट हो जाता है।

[29]धैर्यपूर्ण व्यक्ति बहुत समझ बूझ रखता है, किन्तु ऐसा व्यक्ति जिसे जल्दी से क्रोध आये वह तो अपनी ही मूर्खता दिखाता है।

[30]शान्त मन शरीर को जीवन देता है किन्तु ईर्ष्या हड्डियों तक को सड़ा देती है।

[31]जो गरीब को सताता है, वह तो सबके सृजनहार का अपमान करता है। किन्तु वह जो भी कोई गरीब पर दयालु रहता है, वह परमेश्वर का आदर करता है।

[32]जब दुष्ट जन पर विपदा पड़ती है तब वह हार जाते है किन्तु धर्मी जन तो मृत्यु में भी विजय हासिल करते है।

[33] बुद्धिमान के मन में बुद्धि का निवास होता है, और मूर्खो के बीच भी वह निज को जनाती है।

[34]नेकी से राष्ट्र का उत्थान होता है; किन्तु पाप हर जाति का कलंक होता है।

[35]विवेकी सेवक, राजा की प्रसन्नता है, किन्तु वह सेवक जो मूर्ख होता है वह उसका क्रोध जगाता है।

15 कोमल उत्तर से क्रोध शांत होता है किन्तु कठोर वचन क्रोध को भड़काता है।

[2]बुद्धिमान की वाणी ज्ञान की प्रशंसा करती है, किन्तु मूर्ख का मुख मूर्खता उगलता है।

[3]यहोवा की आँख हर कहीं लगी हुयी है। वह भले और बुरे को देखती रहती है।

[4]जो वाणी मन के घाव भर देती है, जीवन–वृक्ष होती है; किन्तु कपटपूर्ण वाणी मन को कुचल देती है।

[5]मूर्ख अपने पिता की प्रताड़ना कातिरस्कार करता है, किन्तु जो कान सुधार पर देता है बुद्धिमानी दिखाता है।

[6]धर्मो के घर का कोना भरा पूरा रहता है दुष्ट की कमाई उस पर कलेश लाती है ।

[7]बुद्धिमान की वाणी ज्ञान फैलाती है, किन्तु मूर्खो का मन ऐसा नहीं करता है।

[8]यहोवा दुष्ट के चढ़ावे से घृणा करता है किन्तु उसको सज्जन की प्रार्थना ही प्रसन्न कर देती है।

[9]दुष्टों की राहों से यहोवा घृणा करता है। किन्तु जो नेकी की राह पर चलते हैं, उनसे वह प्रेम करता है।

[10]उसकी प्रतीक्षा में कठोर दण्ड रहता है जो पथ–भ्रष्ट हो जाता, और जो सुधार से घृणा करता है, वह निश्चय मर जाता है।

11जबकि यहोवा के समक्ष मृत्यु और विनाश के रहस्य खुले पड़े है। सो निश्चित रूप से वह जानता है कि लोगों के दिलों में क्या हो रहा है।

12उपहास करने वाला सुधार नहीं अपनाता है। वह विवेकी से परामर्श नहीं लेता।

13मन की प्रसन्नता मुख को चमकाती, किन्तु मन का दर्द आत्मा को कुचल देता है।

14जिस मन को भले बुरे का बोध होता है वह तो ज्ञान की खोज में रहता है किन्तु मूर्ख का मन, मूढ़ता पर लगता है।

15कुछ गरीब सदा के लिये दुःखी रहते है, किन्तु प्रफुल्लित चित उत्सव मनाता रहता है।

16बेचैनी के साथ प्रचुर धन उत्तम नहीं, यहोवा का भय मानते रहने से थोड़ा भी धन उत्तम है।

17घृणा के साथ अधिक भोजन से, प्रेम के साथ थोड़ा भोजन उत्तम है।

18क्रोधी जन मतभेद भड़काता रहता है, जबकि सहनशील जन झगड़े को शांत करता।

19आलसी की राह कांटों से रूधी रहती, जबकि सज्जन का मार्ग राजमार्ग होता है।

20विवेकी पुत्र निज पिता को आनन्दित करता है, किन्तु मूर्ख व्यक्ति निज माता से घृणा करता।

21भले–बुरे का ज्ञान जिसको नहीं होता है ऐसे मनुष्य को तो मूढ़ता सुख देती है, किन्तु समझदार व्यक्ति सीधी राह चलता है ।

22बिना परामर्श के योजनायें विफल होती है। किन्तु वे अनेक सलाहकारों से सफल होती है।

23मनुष्य उचित उत्तर देने से आनन्दित होता है। यथोचित समय का वचन कितना उत्तम होता है।

24विवेकी जन को जीवन–मार्ग ऊँचे से ऊँचा ले जाता है,जिससे वह मृत्यु के गर्त में नीचे गिरने से बचा रहे।

25यहोवा अभिमानी के घर को छिन्न–भिन्न करता है; किन्तु वह विवश विधवा के घर की सीमा बनाये रखता।

26दुष्टों के विचारों से यहोवा को घृणा है, पर सज्जनों के विचार उसको सदा भाते हैं।

27लालची मनुष्य अपने घराने पर विपदा लाता है किन्तु वही जीवित रहता है जो जन घूस से घृणा भाव रखता है।

28धर्मी जन का मन तौल कर बोलता है किन्तु दुष्ट का मुख, बुरी बात उगलता है।

29यहोवा दुष्टों से दूर रहता है, अति दूर; किन्तु वह धर्मी की प्रार्थना सुनता है।

30 आनन्द भरी मन को हर्षाती, अच्छा समाचार हड्डियों तक हर्ष पहुँचाता है।

31जो जीवनदायी डाँट सुनता है, वही बुद्धिमान जनों के बीच चैन से रहेगा।

32ऐसा मनुष्य जो प्रताड़ना की उपेक्षा करता, वह तो विपत्ति को स्वयं अपने आप पर बुलाता है; किन्तु जो ध्यान देता है सुधार पर, समझ–बूझ पाता है।

33 यहोवा का भय लोगों को ज्ञान सिखाता है। आदर प्राप्त करने से पहले नम्रता आती है।

16 मनुष्य तो निज योजना को रचता है, किन्तु उन्हें यहोवा ही कार्य रूप देता है।

2मनुष्य को अपनी राहें पाप रहित लगती है किन्तु यहोवा उसकी नियत को परखता है।

3जो कुछ तू यहोवा को समर्पित करता है तेरी सारी योजनाएँ सफल होंगी।

4यहोवा ने अपने उद्देश्य से हर किसी वस्तु को रचा है यहाँ तक कि दुष्ट को भी नाश के दिन के लिये ।

5जिनके मन में अंहकार भरा हुआ है, उनसे यहोवा घृणा करता है। इसे तू सुनिश्चित जान, कि वे बिना दण्ड पाये नहीं बचेगें।

6खरा प्रेम और विश्वास शुद्ध बनाती है, यहोवा का आदर करने से तू बुराई से बचेगा।

7यहोवा को जब मनुष्य की राहें भाती हैं, वह उसके शत्रुओं को भी साथ शांति से रहने को मित्र बना देता।

8अन्याय से मिले अधिक की अपेक्षा, नेकी के साथ थोड़ा मिला ही उत्तम है।

9मन में मनुष्य निज राहें रचता है, किन्तु प्रभु उसके चरणों को सुनिश्चित करता है ।

10राजा जो बोलता नियम बन जाता है उसे चाहिए वह न्याय से नहीं चूके।

11खरे तराजू और माप यहोवा से मिलते है, उसी ने ये सब थैली के बट्टे रचे हैं। ताकि कोई किसी को छले नहीं।

12विवेकी राजा, बुरे कर्मो से घृणा करता है क्योंकि नेकी पर ही सिंहासन टिकता है।

13राजाओं को न्याय पूर्ण वाणी भाती है, जो जन सत्य बोलता है, वह उसे ही मान देता है।

14राजा का कोप मृत्यु का दूत होता है किन्तु ज्ञानी जन से ही वह शांत होगा।

15राजा जब आनन्दित होता है तब सब का जीवन उत्तम होता है, अगर राजा तुझ से खुश है तो वह वासंती के वर्षा सी है।

16विवेक सोने से अधिक उत्तम है, और समझ बूझ पाना चाँदी से उत्तम है।

17सज्जनों का राजमार्ग बदी से दूर रहता है। जो अपने राह की चौकसी करता है, वह अपने जीवन की रखवाली करता है।

18नाश आने से पहले अहंकार आ जाता और पतन से पहले चेतना हठी हो जाती।

19धनी और स्वाभिमानी लोगों के साथ सम्पत्ति बाँट लेने से, दीन और गरीब लोगों के साथ रहने उत्तम है।

20जो भी सुधार संस्कार पर ध्यान देगा फूलेगा–फलेगा; और जिसका भरोसा यहोवा पर है वही धन्य है।

21बुद्धिशील मन वाले समझदार कहलाते, और ज्ञान को मधुर शब्दों से बढ़ावा मिलता है।

22जिनके पास समझ बूझ है, उनके लिए समझ बूझ जीवन स्रोत होती है, किन्तु मूर्खो की मूढ़ता उनको दण्ड दिलवाती।

23बुद्धिमान का हृदय उसकी वाणी को अनुशासित करता है, और उसके होंठ शिक्षा को बढ़ावा देते है।

24मीठी वाणी छत्ते के शहद सी होती है, एक नयी चेतना भीतर तक भर देती है।

25मार्ग ऐसा भी होता जो उचित जान पड़ता है, किन्तु परिणाम में वह मृत्यु को जाता है।

26काम करने वाले की भूख भरी इच्छाएँ उससे काम करवाती रहती हैं। यह भूख ही उस को आगे धकेलती है।

27बुरा मनुष्य षड़यन्त्र रचता है, और उसकी वाणी ऐसी होती है जैसी झुलसाती आग।

28उत्पाती मनुष्य मतभेद भड़काता है, और बेपैर बातें निकट मित्रों को फोड देती है।

29अपने पड़ोसी को वह हिंसक फँसा लेता है और कुमार्ग पर उसे खींच ले जाता है।

30जब भी मनुष्य आँखों से इशारा करके मुस्कुराता है, वह गलत और बुरी योजनाऐं रचता रहता है।

31श्वेत केश महिमा मुकुट होते है जो धर्मी जीवन से प्राप्त होते है।

32धीर जन किसी योद्धा से भी उत्तम हैं, और जो क्रोध पर नियन्त्रण रखता है, वह ऐसे मनुष्य से उत्तम होता है जो पूरे नगर को जीत लेता है।

33पासा तो झोली में फेंक दिया जाता है, किन्तु उसका हर निर्णय यहोवा ही करता है।

17 झंझट झमेलों भरे घर की दावत से चैन और शांति का सूखा रोटी का टुकड़ा उत्तम है।

2बुद्धिमान दास एक ऐसे पुत्र पर शासन करेगा जो घर के लिए लज्जाजनक होता है। बुद्धिमान दास वह पुत्र के जैसा ही उत्तराधिकार पानें मे सहभागी होगा।

3जैसे चाँदी और सोने को परखने शोधने कुठाली और आग की भट्टी होती है वैसे ही यहोवा हृदय को परखता शोधता है।

4दुष्ट जन, दुष्ट की वाणी को सुनता है, मिथ्यावादी बैर भरी वाणी पर ध्यान देता।

5ऐसा मनुष्य जो गरीब की हंसी उडाता, उसके सृजनहार से वह घृणा दिखाता है। वह दुःख में खुश होता है।

6नाती–पोते वृद्ध जन का मुकुट होते हैं, और माता–पिता उनके बच्चों का मान हैं।

7मूर्ख को जैसे अधिक बोलना नहीं सजता है वैसे ही गरिमापूर्ण व्यक्ति को झूठ बोलना नहीं सजता।

8घूँस देने वाले की घूँस महामंत्र जैसे लगती है, जिससे वह जहाँ भी जायेगा, सफल ही हो जायेगा।

9वह जो बुरी बात पर पर्दा डाल देता है, उघाड़ता नहीं है, प्रेम को बढ़ाता है। किन्तु जो बात को उघाड़ता ही रहता है, गहरे दोस्तों में फूट डाल देता है।

10विवेकी को धमकाना उतना ही प्रभावित करता है जितना मूर्ख को सौ–सौ कोड़े भी नहीं करते।

11दुष्ट जन तो बस सदा विद्रोह करता रहता, उसके लिये दया हीन अधिकारी भेजा जायेगा।

12अपनी मूर्खता में चूर किसी मूर्ख से मिलने से अच्छा है, उस रीछनी से मिलना जिससे उसके बच्चों को छीन लिया गया हो।

13भलाई के बदले में यदि कोई बुराई करे तो उसके घर को बुराई नहीं छोड़ेगी।

14झगड़ा शुरू करना ऐसा है जैसे बांध का टूटना है, सो, इसके पहले कि तकरार शुरू हो जाय बात खत्म करो।

15यहोवा इन दोनों ही बातों से घृणा करता है, दोषी को छोड़ना, और निर्दोष को दण्ड देना।

16मूर्ख के हाथों में धन का क्या प्रयोजन! क्योंकि, उसको चाह नहीं कि बुद्धि को मोल ले।

17मित्र तो सदा–सर्वदा प्रेम करता है बुरे दिनों को काम आने का बंधु बन जाता है।

18विवेक हीन जन ही शपथ से हाथ बंधा लेता और अपने पड़ोसी का ऋण ओढ़ लेता है।

19 जिसको लड़ाई–झगड़ा भाता है, वह तो केवल पाप से प्रेम करता है और जो डींग हांकता रहता है वह तो अपना ही नाश बुलाता है।

20कुटिल हृदय जन कभी फूलता फलता नहीं है और जिस की वाणी छल से भरी हुई है, विपद में गिरता है।

21मूर्ख पुत्र पिता के लिए पीड़ा लाता है, मूर्ख के पिता कभी आनन्द नहीं होता।

22प्रसन्न चित्त रहना सबसे बड़ी दवा है, किन्तु बुझा मन हड्डियों को सुखा देता है।

23दुष्ट जन, उसके मार्ग से न्याय को डिगाने एकांत में घूंस लेता है।

24बुद्धिमान जन बुद्धि को सामने रखता है, किन्तु मूर्ख की आँखें धरती के छोरों तक भटकती हैं।

25मूर्ख पुत्र पिता को तीव्र व्यथा देता है, और माँ के प्रति जिसने उसको जन्म दिया, कड़ुवाहट भर देता।

26किसी निर्दोष को दण्ड देना उचित नहीं, ईमानदार नेता को पीटना उचित नहीं है।

27ज्ञानी जन शब्दों को तोल कर बोलता है, समझ–बूझ वाला जन स्थित प्रज्ञ होता है।

28मूर्ख भी जब तक नहीं बोलता शोभता है। और यदि निज वाणी रोके रखे तो ज्ञानी जाना जाता है।

18 मित्रता रहित व्यक्ति अपने स्वार्थ साधता है। वह समझदारी की बातें नकार देता है।

2मूर्ख सुख वह शेखचिल्ली बनने में लेता है। सोचता नहीं है कभी वे पूर्ण होंगी या नहीं। सुख उसे समझदारी की बातें नहीं देती।

3दुष्टता के साथ–साथ घृणा भी आती है और निन्दा के साथ अपमान।

4बुद्धिमान के शब्द गहरे जल से होते है, वे बुद्धि के स्रोत से उछलते हुए आते हैं।

5दुष्ट जन का पक्ष लेना और निर्दोष को न्याय से वंचित रखना उचित नहीं होता।

6मूर्ख की वाणी झंझटों को जन्म देती है और उसका मुख झगड़ों को न्योता देता है।

7मूर्ख का मुख उसका काम को बिगाड़ देता है और उसके अपने ही होठों के जाल में उसका प्राण फँस जाता है।

8लोग हमेशा कानाफूसी करना चाहते है, यह उत्तम भोजन के समान है जो पेट के भीतर उतरता चला जाता है।

9जो अपना काम मंद गति से करता है, वह उसका भाई है, जो विनाश करता है ।

10यहोवा का नाम एकगढ़ सुदृढ़ है। उस ओर धर्मी बढ़ जाते है और सुरक्षित रहते है।

11धनिक समझते है कि उनका धन उन्हें बचा लेगा– वह समझते है कि वह एक सुरक्षित किला है।

12पतन से पहले मन अहंकारी बन जाता, किन्तु सम्मान से पूर्व विनम्रता आती है।

13बात को बिना सुने ही, जो उत्तर में बोल पड़ता है, वह उसकी मूर्खता और उसका अपयश है।

14मनुष्य का मन उसे व्याधि में थामें रखता किन्तु टूटे मन को भला कोई कैसे थामे।

15बुद्धिमान का मन ज्ञान को प्राप्त करता है। बुद्धिमान के कान इसे खोज लेते हैं।

16उपहार देने वाले का मार्ग उपहार खोलता है और उसे महापुरुषों के सामने पहुँचा देता।

17पहले जो बोलता है ठीक ही लगता है किन्तु बस तब तक ही जब तक दूसरा उससे प्रश्न नहीं करता है।

18यदि दो शक्तिशाली आपस में झगड़ते हों, उत्तम हैं कि उनके झगड़े को पासे फेंक कर निपटाना।

19किसी दृढ़ नगर को जीत लेने से भी रूठे हुए बन्धु को मनाना कठिन है, और आपसी झगड़े होते ऐसे जैसे गढ़ी के मुंदे द्वार होते है।

20मनुष्य का पेट उसके मुख के फल से ही भरता है , उसके होठों की खेती का प्रतिफल उसे मिला है।

21वाणी जीवन, मृत्यु की शक्ति रखती है, और जो वाणी से प्रेम रखते है, वे उसका फल खाते हैं।

22जिसको पत्नी मिली है, वह उत्तम पदार्थ पाया है। उसको यहोवा का अनुग्रह मिलता है।

23गरीब जन तो दया की मांग करता है, किन्तु धनी जन तो कठोर उत्तर देता है।

24कुछ मित्र ऐसे होते हैं जिनका साथ मन को भाता है किन्तु अपना घनिष्ठ मित्र भाई से भी उत्तम हो सकता है।

19 वह गरीब श्रेष्ठ है, जो निष्कलंक रहता; न कि वह मूर्ख जिसकी कुटिलतापूर्ण वाणी है।

2ज्ञान रहित उत्साह रखना अच्छा नहीं है इससे उतावली में गलती हो जाती है।

3मनुष्य अपनी ही मुर्खता से अपना जीवन बिगाड़ लेता है, किन्तु वह यहोवा को दोषी ठहराता है।

4धन से बहुत सारे मित्र बन जाते हैं, किन्तु गरीब जन को उसका मित्र भी छोड़ जाता है।

5झूठा गवाह बिना दण्ड पाये नहीं बचेगा और जो झूठ उगलता रहता है, छूटने नहीं पायेगा।

6उसके बहुत से मित्र बन जाना चाहते हैं, जो उपहार देता रहता है।

7निर्धन के सभी सम्बन्धी उससे कतराते हैं। उसके मित्र उससे कितना बचते फिरते हैं, यद्यपि वह उन्हें अनुनय–विनय से मनाता रहता है किन्तु वे उसे कहीं मिलते ही नहीं हैं।

8जो ज्ञान पाता है वह अपने ही प्राण से प्रीति रखता, वह जो समझ बूझ बढ़ाता रहता है फलता और फूलता है।

9झूठा गवाह दण्ड पाये बिना नहीं बचेगा, और वह, जो झूठ उगलता रहता है ध्वस्त हो जायेगा।

10मूर्ख धनी नहीं बनना चाहिये। वह ऐसे होगा जैसे कोई दास युवराजाओं पर राज करें।

11अगर मनुष्य बुद्धिमान हो उसकी बुद्धि उसे धीरज देती है। जब वह उन लोगों को क्षमा करता है जो उसके विरुद्ध हो, तो अच्छा लगता है।

12राजा का क्रोध सिंह की दहाड़ सा है, किन्तु उसकी कृपा घास पर की ओस की बूंद सी होती।

13मूर्ख पुत्र विनाश का बाढ़ होता है; अपने पिता के लिए और पत्नी के नित्य झगड़े हर दम का टपका है।

14भवन और धन दौलत माँ बाप से दान में मिल जाते; किन्तु बुद्धिमान पत्नी यहोवा से मिलती है।

15आलस्य गहन घोर निद्रा देता है किन्तु वह आलसी भूखा मरता है।

16ऐसा मनुष्य जो निर्देशों पर चलता वह अपने जीवन की रखवाली करता है। किन्तु जो सदुपदेशों उपेक्षा करता है वह मृत्यु अपनाता है।

17गरीब पर कृपा दिखाना यहोवा को उधार देना है, यहोवा उसे, उसके इस कर्म का प्रतिफल देगा।

18तू अपने पुत्र को अनुशासित कर और उस दण्ड दे, जब वह अनुचित हो। बस यही आशा है। यदि तू ऐसा करने को मना करे, तब तो तू उसके विनाश में उसका सहायक बनता है।

19यदि किसी मनुष्य को तुरंत क्रोध आयेगा, उसको इसका मूल्य चुकाना होगा। यदि तू उसकी रक्षा करता है, तो कितनी ही बार तुझे उसको बचाना होगा।

20सुमति पर ध्यान दे और सुधार को अपना ले तू जिससे अंत में तू बुद्धिमान बन जाये।

21मनुष्य अपने मन में क्या–क्या! करने की सोचता है किन्तु यहोवा का उद्देश्य पूरा होता है।

22लोग चाहते है व्यक्ति विश्वास योग्य और सच्चा हो, इसलिए गरीबी में विश्वासयोग्य बनकर रहना अच्छा है। ऐसा व्यक्ति बनने से जिस पर कोई विश्वास न करे।

23यहोवा का भय सच्चे जीवन की राह दिखाता, इससे व्यक्ति शांति पाता है और कष्ट से बचता है।

24आलसी का हाथ चाहे थाली में रखा हो किन्तु वह उसको मुँह तक नहीं ला सकता।

25उच्छृंखल को पीट, जिससे सरल जन बुद्धि पाये बुद्धिमान को डाँट, वह और ज्ञान पायेगा।

26ऐसा पुत्र जो निन्दनीय कर्म करता है घर का अपमान होता है, वह ऐसा होता है जैसे पुत्र कोई निज पिता से छीने और घर से असहाय माँ को निकाल बाहर करे।

27मेरे पुत्र यदि तू अनुशासन पर ध्यान देना छोड़ देगा, तो तू ज्ञान के वचनों से भटक जायेगा।

28भ्रष्ट गवाह न्याय की हँसी उड़ाता है, और दुष्ट का मुख पाप को निगल जाता।

29उच्छृंखल दण्ड पायेगा, और मूर्ख जन की पीठ कोड़े खायेगी।

20 मदिरा और यवसुरा लोगों को काबू में नहीं रहने देते । वह मजाक उडवाती है और झगड़े करवाती है। वह मदमस्त हो जाते है और बुद्धिहीन कार्य करते है।

2राजा का सिंह की दहाड़ सा कोप होता है, जो उसे कुपित करता प्राण से हाथ धोता है।

3झगड़ों से दूर रहना मनुष्य का आदर है; किन्तु मूर्ख जन तो सदा झगड़े को तत्पर रहते।

4ऋतु आने पर अदूरदर्शी आलसी हल नहीं डालता है सो कटनी के समय वह ताकता रह जाता है और कुछ भी नहीं पाता है।

5जन के मन प्रयोजन, गहन जल से छिपे होते किन्तु समझदार व्यक्ति उन्हें बाहर खींच लाता है।

6लोग अपनी विश्वास योग्यता का बहुत ढोल पीटते है, किन्तु विश्वसनीय जन किसको मिल पाता है?

7धर्मी जन निष्कलंक जीवन जीता है उसके बाद आने वाली संताने धन्य हैं।

8जब राजा न्याय को सिंहासन पर विराजता अपनी दृष्टि मात्र से बुराई को फटक छांटता है।

9कौन कह सकता है? "मैंने अपना हृदय पवित्र रखा है, मैं विशुद्ध, और पाप रहित हूँ"

10इन दोनों से, खोटे बाटों और खोटी नापों से यहोवा घृणा करता है।

11बालक भी अपने कर्मो से जाना जाता है, कि उसका चालचलन शुद्ध है, या नही।

12यहोवा ने कान बनाये हैं कि हम सुनें! यहोवा ने आँखें बनाई हैं कि हम देखे! यहोवा ने इन दोनों को इसलिये हमारे लिए बनाया।

13निद्रा से प्रेम मत कर दरिद्र हो जायेगा; तू जागता रह तेरे पास भरपूर भोजन होगा।

14ग्राहक खरीदते समय कहता है "अच्छा नहीं, बहुत महंगा!" किन्तु जब वहाँ से वह दूर चला जाता है अपनी खरीद की शेखी बघारता है।

15सोना बहुत है और मणि माणिक बहुत सारे है, किन्तु ऐसे अधर जो बातें ज्ञान की बताते दुर्लभ रत्न होतें है।

16जो किसी अजनबी के ऋण की जमानत देता है वह अपने वस्त्र तक गंवा बैठता है।

17छल से कमाई रोटी मीठी लगती है पर अंत में उसका मुंह कंकड़ों से भर जाता।

18योजनाएं बनाने से पहले तू उत्तम सलाह पा लिया कर। यदि युद्ध करना हो तो उत्तम लोगों से आगुवा लें।

19बकवादी विश्वास को धोखा देता है सो, उस व्यक्ति से बच जो बहुत बोलता हो।

20कोई मनुष्य यदि निज पिता को अथवा निज माता को कोसे, उसका दीया बुझ जायेगा और गहन अंधकार हो जायेगा।

21यदि तेरी सम्पत्ति तुझे आसानी से मिल गई हो तो वह तुझे अधिक मूल्यवान नहीं लगेगा।

22इस बुराई का बदला मैं तुझसे लूँगा। ऐसा तू मत कह; यहोवा की बाट जोह तुझे वही मुक्त करेगा।

23यहोवा खोटे–झूठे बाटों से घृणा करता है और उसको खोटे नाप नहीं भाते हैं।

24यहोवा निर्णय करता है कि हर एक मनुष्य के साथ क्या घड़ना चाहिये। कोई मनुष्य कैसा समझ सकता है कि उसके जीवन में क्या घड़ने वाला है।

25यहोवा को कुछ अर्पण करने की प्रतिज्ञा से पूर्व ही विचार ले; भली भांति विचार ले। सम्भव है यदि तू बाद में ऐसा सोचे, 'अच्छा होता मैं वह मन्नत न मानता।'

26विवेकी राजा यह निर्णय करता है कि कौन बुरा जन है। और वह राजा उस जन को दण्ड देगा।

27यहोवा का दीपकजन की आत्मा को जाँच लेता, और उसके अन्तरात्मा स्वरूप को खोज लेता है।

28राजा को सत्य और निष्ठा सुरक्षित रखते, किन्तु उसका सिंहासन करुणा पर टिकता है ।

29युवकों की महिमा उनके बल से होती है और वृद्धों का गौरव उनके पके बाल हैं।

30यदि हमे दण्ड दिया जाय तो हम बुरा करना छोड देते है। दर्द मनुष्य का परिवर्तन कर सकता है।

21 राजाओं का मन यहोवा के हाथ होता, जहाँ भी वह चाहता उसको मोड़ देता है वैसे ही जैसे कोई कृषक पानी खेत का।

2सबको अपनी–अपनी राहें उत्तम लगती हैं किन्तु यहोवा तो मन को तौलता है।

3तेरा उस कर्म का करना जो उचित और नेक है यहोवा को अधिक चढ़ावा चढ़ाने से ग्राह्य है ।

4गर्वीली आँखें और दर्पीला मन पाप हैं ये दुष्ट की दुष्टता को प्रकाश में लाते हैं।

5परिश्रमी की योजनाएँ लाभ देती हैं यह वैसे ही निश्चित है जैसे उतावली से दरिद्रता आती है।

6झूठ बोल–बोल कर कमाई धन दौलत भाप सी अस्थिर है, और वह घातक फंदा बन जाती है।

7दुष्ट की हिंसा उन्हें खींच ले डूबेगी क्योंकि वे उचित कर्म करना नहीं चाहते।

[8]अपराधी का मार्ग कुटिलता–पूर्ण होता है किन्तु जो सज्जन हैं उसकी राह सीधी होती है।

[9]झगड़ालू पत्नी के संग घर में निवास से, छत के किसी कोने पर रहना अच्छा है।

[10]दुष्ट जन सदा पाप करने को इच्छुक रहता, उसका पड़ोसी उससे दया नहीं पाता।

[11]जब उच्छृंखल दण्ड पाता है तब सरल जन को बुद्धि मिल जाती है; किन्तु बुद्धिमान तो सुधारे जाने पर ही ज्ञान को पाता है।

[12]न्यायपूर्ण परमेश्वर दुष्ट के घर पर आँख रखता है, और दुष्ट जन का वह नाश कर देता है।

[13]यदि किसी गरीब की, करुण पुकार पर कोई मनुष्य निज कान बंद करता है, तो वह जब पुकारेगा उसकी पुकार भी नहीं सुनी जायेगी।

[14]गुप्त रुप से दिया गया उपहार क्रोध को शांत करता, और छिपा कर दी गई घूंस भंयकर क्रोध शांत करती है।

[15]न्याय जब पूर्ण होता धर्मी को सुख होता, किन्तु कुकर्मियों को महा भय होता है।

[16]जो मनुष्य समझ–बूझ के पथ से भटक जाता है, वह विश्राम करने के लिए मृतकों का साथी बनता है।

[17]जो सुख भोगों से प्रेम करता रहता वह दरिद्र हो जायेगा, और जो मदिरा का प्रेमी है, तेल का कभी धनी नहीं होगा।

[18]दुर्जन को उन सभी बुरी बातों का फल भुगतना ही पडेगा, जो सज्जन के विरुद्ध करते हैं। बेईमान लोगों को उनके किये का फल भुगतना पड़ेगा जो इमानदार लोगों के विरुद्ध करते है।

[19]चिड़चिड़ी झगड़ालू पत्नी के संग रहने से निर्जन बंजर में रहना उत्तम है।

[20]विवेकी के घर में मन चीते भोजन और प्रचुर तेल केभंडार भरे होते है किन्तु मूर्ख व्यक्ति जो उसके पास होता है, सब चट कर जाता है।

[21]जो जन नेकी और प्रेम का पालन करता है, वह जीवन, सम्पन्नता और समादर को प्राप्त करता है।

[22]बुद्धिमान जन को कुछ भी कठिन नहीं है। वह ऐसे नगर पर भी चढ़ायी कर सकता है जिसकी रखवाली शूरवीर करते हो, वह उस परकोटे को ध्वस्त कर सकता है जिसके प्रति वे अपनी सुरक्षा को विश्वस्त थे।

[23]वह जो निज मुख को और अपनी जीभ को वश में रखता वह अपने आपको विपत्ति से बचाता है।

[24]ऐसे मनुष्य अहंकारी होता, जो निज को औरों से श्रेष्ठ समझता है, उस का नाम ही “अभिमानी” होता है। अपने ही कर्मो से वह दिखा देता है कि वह दुष्ट होता है।

[25]आलसी पुरूष के लिये उसकी ही लालसाएँ उसके मरण का कारण बन जाती है क्योंकि उसके हाथ कर्म को नहीं अपनाते।

[26]दिन भर वह चाहता ही रहता यह उसको और मिले, और किन्तु धर्मी जन तो बिना हाथ खींचे देता ही रहता है।

[27]दुष्ट का चढ़ावा यूं ही घृणापूर्ण होता है फिर कितना बुरा होगा जब वह उसे बुरे भाव से चढ़ावे?

[28]झूठे गवाह का नाश हो जायेगा; और जो उसकी झूठी बातों को सुनेगा वह भी उस ही के संग सदा सर्वदा के लिए नष्ट हो जायेगा।

[29]सज्जन तो निज कर्मो पर विचार करता है किन्तु दुर्जन का मुख अकड़ कर दिखाता है।

[30]यदि यहोवा न चाहें तो, न ही कोई बुद्धि और न ही कोई अर्न्तदृष्टि, न ही कोई योजना पूरी हो सकती है।

[31]युद्ध के दिन को घोड़ा तैयार किया है, किन्तु विजय तो बस यहोवा पर निर्भर है।

22 अच्छा नाम अपार धन पाने से योग्य है।
चाँदी, सोने से, प्रशंसा का पात्र होना अधिक
उत्तम है।

[2]धनिकों में निर्धनों में यह एक समता है, यहोवा ही इन सब ही का सिरजन हार है।

[3]कुशल जन जब किसी विपत्ति को देखता है, उससे बचने के लिए इधर उधर हो जाता किन्तु मूर्ख उसी राह पर बढ़ता ही जाता है। और वह इसके लिए दु:ख ही उठाता है।

[4]जब व्यक्ति विनम्र होता है यहोवा का भय धन दौलत, आदर और जीवन उपजता है।

[5]कुटिल की राहें काँटो से भरी होती है और वहाँ पर फंदे फैले होते हैं; किन्तु जो निज आत्मा की रक्षा करता है वह तो उनसे दूर ही रहता है।

[6] बच्चे को यहोवा की राह पर चलाओ वह बुढ़ापे में भी उस से भटकेगा नहीं।

[7]धनी दरिद्रों पर शासन करते हैं। उधार लेने वाला, देने वालें का दास होता है।

[8]ऐसा मनुष्य जो दुष्टता के बीज बोता वह तो संकट की फसल काटेगा; और उसकी क्रोध की लाठी नष्ट हो जायेगी।

[9]उदार मन का मनुष्य स्वयं ही धन्य होगा, क्योंकि वह गरीब जन के साथ बाँट कर खाता है।

[10]निन्दक को दूर कर तो कलह दूर होगा। इससे झगड़े और अपमान मिट जाते है।

[11]वह जो पवित्र मन को प्रेम करता है और जिसकी वाणी मनोहर होती है उसका तो राजा भी मित्र बन जाता है।

[12]यहोवा सदा ज्ञान का ध्यान रखता है; किन्तु वह विश्वासघाती के वचन विफल करता।

[13]काम नहीं करने के बहाने बनाता हुआ आलसी कहता है, "बाहर बैठा है सिंह" या "गलियों में मुझे मार डाला जायेगा।"

[14]व्यभिचार का पाप ऐसा होता है जैसे हो कोई जाल। यहोवा उससे बहुत कुपित होगा जो भी इस जाल में गिरेगा।

[15]बच्चे शैतानी करते रहते हैं किन्तु अनुशासन की छड़ी ही उनको दूर कर देती।

[16]ऐसा मनुष्य जो अपना धन बढ़ाने गरीब को दबाता है; और वह, जो धनी को उपहार देता, दोनों ही ऐसे जन निर्धन हो जाते हैं।

तीस विवेकपूर्ण कहावतें

[17]बुद्धिमान की कहावतें सुनों और ध्यान दो। उस पर ध्यान लगाओं जो मैं सिखाता हूँ। [18]तू यदि उनको अपने मन में बसा ले तो बहुत अच्छा होगा; तू उन्हें हरदम निज होठों पर तैयार रख। [19]मैं तुझे आज उपदेश देता हूँ ताकि तेरा यहोवा पर विश्वास पैदा हो। [20]ये तीस शिक्षाएं मैंने तेरे लिए रची, ये वचन सन्मति के और ज्ञान के है। [21]वे बातें जो महत्वपूर्ण होती, ये सत्य वचन तुझको सिखायेगें ताकि तू उसको उचित उत्तर दे सके, जिसने तुझे भेजा है।

–1–

[22] तू गरीब का शोषण मत कर। इसलिए कि वे बस दरिद्र हैं; और अभावग्रस्त को कचहरी में मत खींच। [23] क्योंकि परमेश्वर उनकी सुनवाई करेगा और जिन्होंने उन्हें लूटा है वह उन्हें लूट लेगा।

–2–

[24]तू क्रोधी स्वभाव के मनुष्यों के साथ कभी मित्रता मत कर और उसके साथ, अपने को मत जोड़ जिसको शीघ्र क्रोध आ जाता है। [25]नहीं तो तू भी उसकी राह चलेगा और अपने को जाल में फँसा बैठेगा।

–3–

[26]तू ज़मानत किसी के ऋण की देकर अपने हाथ मत कटा। [27]यदि उसे चुकाने में तेरे साधन चुकेंगे तो नीचे का बिस्तर तक तुझसे छिन जायेगा।

–4–

[28]तेरी धरती की सम्पत्ति जिसकी सीमाएँ तेरे पूर्वजों ने निर्धारित कीं उस सीमा रेखा को कभी भी मत हिला।

–5–

[29]यदि कोई व्यक्ति अपने कार्य में कुशल है, तो वह राजा की सेवा के योग्य है। ऐसे व्यक्तियों के लिये जिनका कुछ महत्व नहीं उसको कभी काम नहीं करना पड़ेगा।

–6–

23 जब तू किसी अधिकारी के साथ भोजन पर बैठे तो इसका ध्यान रख, कि कौन तेरे सामने है। [2]यदि तू पेटू है तो खाने पर नियन्त्रण रख। [3]उसके पकवानों की लालसा मत कर क्योंकि वह भोजन तो कपटपूर्ण होता है।

–7–

[4]धनवान बनने का काम कर करके निज को मता थका। तू संयम दिखाने को, बुद्धि अपना ले। [5]ये धन सम्पत्तियाँ देखते ही देखते लुप्त हो जायेंगी निश्चय ही अपने पंखों को फैलाकर वे गरूड़ के समान आकाश में उड़ जायेंगी।

–8–

[6]ऐसे मनुष्य का जो सूम भोजन होता है तू मत कर; तू उसके पकवानों को मत ललचा। [7]क्योंकि वह ऐसा मनुष्य है जो मन में हरदम उसके मूल्य का हिसाब लगाता रहता है; तुझसे तो वह कहता–"तुम खाओ और पियो" किन्तु वह मन से तेरे साथ नहीं है। [8]जो कुछ थोड़ा बहुत तू उसका खा चुका है, तुझको तो वह भी उलटना पड़ेगा और वे तेरे कहे हुएआदर पूर्ण वचन व्यर्थ चले जायेंगे।

−9−

9 तू मूर्ख के साथ बातचीत मत कर, क्योंकि वह
तेरे विवेकपूर्ण वचनों से घृणा ही करेगा।

−10−

10पुरानी सम्पत्ति की सीमा जो चली आ रही हो,
उसको कभी मत हड़प। ऐसी जमीन को जो किसी
अनाथ की हो। 11क्योंकि उनका संरक्षक सामर्थ्यवान
है, तेरे विरुद्ध उनका मुकदमा वह लड़ेगा।

−11−

12तू अपना मन सीख की बातों में लगा। तू ज्ञानपूर्ण
वचनों पर कान दे।

−12−

13तू किसी बच्चे को अनुशासित करने से कभी
मत रूक यदि तू कभी उसे छड़ी से दण्ड देगा तो वह
इससे कभी नहीं मरेगा।
14तू छड़ी से पीट उसे और उसका जीवन नरक से
बचा ले।

−13−

15हे मेरे पुत्र, यदि तेरा मन विवेकपूर्ण रहता है तो
मेरा मन भी आनन्दपूर्ण रहेगा। 16और तेरे होंठ जब जो
उचित बोलते हैं, उससे मेरा अर्न्तमन खिल उठता है।

−14−

17तू अपने मन को पापपूर्ण व्यक्तियों से ईर्ष्या मत
करने दे, किन्तु तू यहोवा से डरने का जितना प्रयत्न
कर सके, कर।
18एक आशा है, जो सदा बनी रहती है और वह
आशा कभी नहीं मरती।

−15−

19मेरे पुत्र, सुन! और विवेकी बनजा और अपनी मन
को नेकी की राह पर चला। 20तू उनके साथ मत रह जो
बहुत पियक्कड़ हैं, अथवा ऐसे, जो ठूंस−ठूंस माँस खाते हैं।
21क्योंकि ये पियक्कड़ और ये पेटू दरिद्र हो जायेंगे,
और यह उनकी खुमारी, उन्हें चिथड़े पहनायेगी।

−16−

22अपनो पिता की सुन जिसने तुझे जीवन दिया है,
अपनी माता का निरादर मत कर जब वह वृद्ध हो जाये।
23वह वस्तु सत्य है, तू इसको किसी भी मोल पर
खरीद ले। ऐसे ही विवेक, अनुशासन और समझ भी
प्राप्त कर; तू इनकों कभी भी किसी मोल पर मत बेच।
24नेक जन का पिता महा आनन्दित रहता और जिसका
पुत्र विवेक पूर्ण होता है वह तो उसमें ही हर्षित रहता है।
25सो तेरी माता और तेरे पिता को आनन्द प्राप्त हो
और जिसने तुझ को जन्म दिया, उसको हर्ष मिलता
ही रहे।

−17−

26मेरे पुत्र, मुझमें मन लगा और तेरी आँखें मुझ
पर टिकी रहें। मुझे आदर्श मान। 27क्योंकि एक वेश्या
गहन गर्त होती है। और मन मौजी पत्नी एक संकरा
कुँआ। 28वह घात में रहती जैसे कोई डाकू और वह
लोगों में विश्वास हीनों की संख्या बढ़ाती है।

−18−

29-30कौन विपत्ति में है? कौन दुःख में पड़ा है?
कौन झगड़े−टंटों में? किसकी शिकायतें है? कौन
व्यर्थ चकना चूर? किसकी आँखे लाल है? वे जो
निरन्तर दाखमधु पीते रहते हैं और जिसमे मिश्रित
मधु की ललक होती है!
31जब दाखमधु लाल हो, और प्यालें में झिलमिलाती
हो और धीरे−धीरे डाली जा रही हो, उसको ललचायी
आँखों से मत देखो। 32सर्प के समान वह डसती, अन्त
में जहर भर देती है जैसे नाग भर देता है।
33तेरी आँखों में विचित्र दृष्य तैरने लगेगें, तेरा मन
उल्टी−सीधी बातों में उलझेगा। 34तू ऐसा हो जायेगा,
जैसे उफनते सागर पर सो रहा हो और जैसे मस्तूल
की शिखर लेटा हो। 35तू कहेगा, "उन्होंने मुझे मारा
पर मुझे तो लगा ही नहीं। उन्होंने मुझे पीटा, पर मुझ
को पता ही नहीं। मुझ से आता नहीं मुझे उठा दो और
मुझे पीने को और दो।"

−19−

24 दुष्ट जन से तू कभी मत होड़कर। उनकी
संगत की तू चाहत मत कर। 2क्योंकि
उनके मन हिंसा की योजनाएँ रचते और उनके होंठ
दुःख देने की बातें करते है।

−20−

3बुद्धि से घर का निर्माण हो जाता है, और समझ−
बूझ से ही वह स्थिर रहता है। 4ज्ञान के द्वारा उसके
कक्ष अद्भुत और सुन्दर खजानों से भर जाते हैं।

–21–

[5]बुद्धिमान जन में महाशक्ति होती है और ज्ञानी पुरुष शक्ति को बढ़ाता है। [6]युद्ध लड़ने के लिए परामर्श चाहिए और विजय पाने को बहुत से सलाहकार।

–22–

[7]मूर्ख बुद्धि को नहीं समझता। लोग जब महत्वपूर्ण बातों कि चर्चा करते है तो मूर्ख समझ नहीं पाता।

–23–

[8]षड़यन्त्रकारी वही कहलाता है, जो बुरी योजनाएँ बनाता रहता है। [9]मूर्ख की योजनायें पाप बन जाती है और निन्दक जन को लोग छोड़ जाते है।

–24–

[10]यदि तू विपत्ति में हिम्मत छोड़ बैठेगा, तो तेरी शक्ति कितनी थोड़ी सी है।

–25–

[11]यदि किसी की हत्या का कोई षड़यन्त्र रचे तो उसको बचाने का तुझे यत्न करना चाहिए। [12]तू ऐसा नहीं कह सकता, "मुझे इससे क्या लेना।" यहोवा जानता है सब कुछ और यह भी वह जानता है कि काम किसलिए तू काम करता है? यहोवा तुझ को देखता रहता है। तेरे भीतर की जानता है और वह तुझ को यहोवा तेरे कर्मो का प्रतिदान देगा।

–26–

[13]हे मेरे पुत्र, तू शहद खाया कर क्योंकि यह उत्तम है। यह तुझे मीठा लगेगा।

[14]इसी तरह यह भी तू जान ले कि आत्मा को तेरी बुद्धि मीठी लगेगी, यदि तू इसे प्राप्त करे तो उसमें निहित है तेरी भविष्य की आशा और वह तेरी आशा कभी भंग नहीं होगी।

–27–

[15]धर्मी मनुष्य के घर के विरोध में लुटेरे के समान घात में मत बैठ और उसके निवास पर मत छापा मार। [16]क्योंकि एक नेक चाहे सात बार गिरे, फिर भी उठ बैठेगा। किन्तु दुष्ट जन विपत्ति में डूब जाता है।

–28–

[17]शत्रु के पतन पर आनन्द मत कर। जब उसे ठोकर लगे, तो अपना मन प्रसन्न मत होने दे। [18]यदि तू ऐसा करेगा, तो यहोवा देखेगा और वह यहोवा की आँखों में आ जायेगा एंव वह तुझसे प्रसन्न नही रहेगा। फिर सम्भव है कि वह तेरे उस शत्रु की ही सहायता करे।

–29–

[19]तू दुर्जनों के साथ कभी ईर्ष्या मत रख, कही तुझे उनके संग विवाद न करना पड़ जाये। [20]क्योंकि दुष्ट जन का कोई भविष्य नहीं है। दुष्ट जन का दीप बुझा दिया जायेगा।

–30–

[21]हे मेरे पुत्र, यहोवा का भय मान और विद्रोहियों के साथ कभी मत मिल। [22]क्योंकि वे दोनों अचानक नाश ढाह देंगे उन पर; और कौन जानता है कितनी भयानक विपत्तियाँ वे भेज दें।

कुछ अन्य सुक्तियाँ

[23]ये सुक्तियाँ भी बुद्धिमान जनों की है:
न्याय में पक्षपात करना उचित नहीं है।

[24]ऐसा जन जो अपराधी से कहता है, "तू निरपराध है" लोग उसे कोसेंगे और जातियाँ त्याग देंगी। [25]किन्तु जो अपराधी को दण्ड देंगे, सभी जन उनसे हर्षित रहेगे और उनपर आर्शीवाद की वर्षा होगी।

[26]निर्मल उत्तर से मन प्रसन्न होता है, जैसे अधरों पर चुम्बन अंकित कर दे।

[27]पहले बाहर खेतों का काम पूरा कर लो इसके बाद में तुम अपना घर बनाओ।

[28]अपने पड़ोसी के विरुद्ध बिना किसी कारण साक्षी मत दो। अथवा तुम अपनी वाणी का किसी को छलने में मत प्रयोग करो।

[29]मत कहे ऐसा, "उसके साथ मैं भी ठीक वैसा ही करूँगा, मेरे साथ जैसा उसने किया है; मैं उसके साथ जैसे को तैसा करूँगा।"

[30]मैं आलसी के खेत से होते हुए गुजरा जो अंगूर के बाग के निकट था जो किसी ऐसे मनुष्य का था, जिसको उचित–अनुचित का बोध नहीं था। [31]कंटीली झाड़ियाँ निकल आयीं थी हर कहीं खरपतवार से खेत ढक गया था। और बाड़ पत्थर की खंडहर हो रही थी। [32]जो कुछ मैंने देखा, उस पर मन लगा कर सोचने लगा। जो कुछ मैंने देखा, उससे मुझको एक सीख मिली। [33]जरा एक झपकी, और थोड़ी सी नींद, थोड़ा सा सुस्ताना, धर कर

हाथों पर हाथ। (दरिद्रता को बुलाना है)34वह तुझ पर टूट पड़ेगी जैसे कोई लुटेरा टूट पड़ता है, और अभाव तुझ पर टूट पड़ेगा जैसे कोई शस्त्र धारी टूट पड़ता है।

सुलैमान की कुछ और सूक्तियाँ

25 सुलैमान की ये कुछ अन्य सूक्तियाँ है जिनका प्रतिलेख यहूदा के राजा हिजकिय्याह के लोगों ने तैयार किया था:

2किसी विषय–वस्तु को रहस्यपूर्ण रखने में परमेश्वर की गरिमा है किन्तु किसी बात को ढूँढ निकालने में राजा की महिमा है।

3जैसे ऊपर अन्तहीन आकाश है और नीचे अटल धरती है, वैसे ही राजाओं के मन होते हैं जिनके ओर–छोर का कोई अता पता नहीं। उसकी थाह लेना कठिन है।

4जैसे चाँदी से खोट का दूर करना, सुनार को उपयोगी होता है,

5वैसी ही, राजा के सामने से दुष्ट को दूर करना नेकी उसके सिहांसन को अटल करता है।

6राजा के सामने अपने बड़ाई मत बखानो और
महापुरुषों के बीच स्थान मत चाहो। 7उत्तम वह है जो
तुझसे कहे, “आ यहाँ, आ जा” अपेक्षा इसके कि कुलीन जन के समक्ष वह तेरा निरादर करे।

8तू किसी को जल्दी में कचहरी में मत घसीट। क्योंकि अंत में वह लज्जित करें तो तू क्या कहेगा?

9यदि तू अपने पड़ोंसी के संग में किसी बात पर विवाद करे, तो किसी जन का विश्वास जो तुझमें
निहित है, उसको तू मत तोड़। 10ऐसा न हो जाये कहीं
तेरी जो सुनता हो, लज्जित तुझे ही करे। और तू ऐसे अपयश का भागी बने जिसका अंत न हो।

11अवसर पर बोला वचन होता है ऐसा जैसे हों चाँदी में स्वर्णिम सेब जड़े हुए।

12जो कान बुद्धिमान की झिड़की सुनता है, वह उसके कान के लिए सोने की बाली या कुन्दन की आभूषण बन जाता है।

13एक विश्वास योग्य दूत, जो उसे भेजते हैं उनके लिये कटनी के समय की शीतल बयार सा होता है हृदय में निज स्वामियों के वह स्फूर्ति भर देता है।

14वह मनुष्य वर्षा रहित पवन और रीतें मेघों सा होता है, जो बड़ी–बड़ी कोरी बातें देने की बनाता है; किन्तु नहीं देता है।

15धैर्यपूर्ण बातों से राजा तक मनाये जाते और नम्र वाणी हड्डी तक तोड़ सकती हैं।

16यद्यपि शहद बहुत उत्तम है, पर तू बहुत अधिक मत खा और यदि तू अधिक खायेगा, तो उल्टी आ जायेगी और रोगी हो जायेगा।

17वैसे ही तू पड़ोसी के घर में बार–बार पैर मत रख। अधिक आना जाना निरादर करता है।

18वह मनुष्य, जो झूठी साक्षी अपने साथी के विरोध में देता है वह तो है हथौडा सा अथवा तलवार सा या
तीखे बाण सा। 19विपत्ति के काल में भरोसा
विश्वास–घाती पर होता है ऐसा जैसे दुःख देता दाँत अथवा लँगड़ाता पैर।

20जो कोई उसके सामने खुशी के गीत गाता है जिसका मन भारी है। वह उसको वैसा लगता है जैसे जोड़े में कोई कपड़े उतार लेता अथवा कोई फोड़े के सफफ पर सिरका उंडेला हो।

21यदि तेरा शत्रु भी कभी भूखा हो, उसके खाने के लिए, तू भोजन दे दे, और यदि वह प्यासा हो, तू
उसके लिए पानी पीने को दे दे। 22यदि तू ऐसा करेगा
वह लज्जित होगा, वह लज्जा उसके चिंतन में अंगारों सी धधकेगी, और यहोवा तुझे उसका प्रतिफल देगा।

23उत्तर का पवन जैसे वर्षा लाता है वैसे ही धूर्त–वाणी क्रोध उपजाती है।

24झगड़ालू पत्नी के साथ घर में रहने से छत के किसी कोने पर रहना उत्तम है।

25किसी दूर देश से आई कोई अच्छी खबर ऐसी लगती है जैसे थके मादे प्यासे को शीतल जल।

26गाद भरे झरने अथवा किसी दूषित कुँए सा होता वह धर्मी पुरुष जो किसी दुष्ट के आगे झुक जाता है।

27जैसे बहुत अधिक शहद खाना अच्छा नहीं वैसे अपना मान बढ़ाने का यत्न करना अच्छा नहीं है।

28ऐसा जन जिसको स्वयं पर नियन्त्रण नहीं, वह उस नगर जैसा है, जिसका परकोटा ढह कर बिखर गया हो।

मूर्खों के सम्बन्ध में विवेकपूर्ण सूक्तियाँ

26 जैसे असंभव है बर्फ का गर्मी में पड़ना और
जैसे वांछित नहीं है कटनी के वक्त पर
वर्षा का आना वैसे ही मूर्ख को मान देना अर्थहीन है।
2यदि तूने किसी का कुछ भी बिगाड़ा नहीं और
तुझको वह शाप दे, तो वह शाप व्यर्थ ही रहेगा। उसका
शाप पूर्ण वचन तेरे ऊपर से यूँ उड़ निकल जायेगा
जैसे चंचल चिड़िया जो टिककर नहीं बैठती।
3घोड़े को चाबुक सधाना पड़ता है। और खच्चर
को लगाम से। ऐसे ही तुम मूर्ख को डंडे से सधाओ।
4मूर्ख को उत्तर मत दो नहीं तो तुम भी स्वयं मूर्ख
से दिखोगे। 5मूर्ख की मूर्खता का तुम उचित उत्तर दो,
नहीं तो वह अपनी ही आँखों में बुद्धिमान बन बैठेगा।
6मूर्ख के हाथों सन्देशा भेजना वैसा ही होता है जैसे
अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारना, या विपत्ति को
बुलाना।
7बिना समझी युक्ति किसी मूर्ख के मुख पर ऐसी
लगती है, जैसे किसी लंगड़े की लटकती मरी टाँग।
8मूर्ख को मान देना वैसा ही होता है जैसे कोई
गुलेल में पत्थर रखना।
9मूर्ख के मुख में सूक्ति ऐसे होती है जैसे शराबी के
हाथ में काँटेदार झाड़ी हो।
10किसी मूर्ख को या किसी अनजाने व्यक्ति को
काम पर लगााना खतरनाक हो सकता है। तुम नहीं
जानते कि किसे दुःख पहुँचेगा।
11जैसे कोई कुत्ता कुछ खा करके बीमार हो जाता
है और उल्टी करके फिर उसको खाता है वैसे ही
मूर्ख अपनी मूर्खता बार बार दोहराता है।
12वह मनुष्य जो अपने को बुद्धिमान मानता है, किन्तु
होता नहीं है वह तो किसी मूर्ख से भी बुरा होता है।

आलसियों से सम्बन्धित सूक्तियाँ

13आलसी करता रहता है, काम नहीं करने के
बहाने कभी वह कहता है सड़क पर सिंह है।
14जैसे अपनी चूल पर चलता रहता किवाड़। वैसे
ही आलसी बिस्तर पर अपने ही करवटें बदलता है।
15आलसी अपना हाथ थाली में डालता है किन्तु
उसका आलस, उसके अपने ही मुँह तक उसे भोजन
नहीं लाने देता।
16आलसी मनुष्य, निज को मानता महाबुद्धिमान!
सातों ज्ञानी पुरुषों से भी बुद्धिमान।
17ऐसे पथिक जो दूसरों के झगड़े में टांग अड़ाता है
जैसे कुत्ते पर काबू पाने के लिए कोई उसके कान पकड़े।
18-19उस उन्मादी सा जो मशाल उछालता है या
मनुष्य जो घातक तीर फेकता है वैसे ही वह भी होता
है जो अपने पड़ोसी छलता है और कहता है– मैं तो
बस यूँ ही मजाक कर रहा था।
20जैसे इन्धन बिना आग बुझ जाती है वैसे ही
कानाफूसी बिना झगड़े मिट जाते हैं।
21कोयला अंगारों को और आग की लपट को लकड़ी
जैसे भड़काती है, वैसे ही झगड़ालू झगड़ो को भड़काता।
22जन प्रवाद भोजन से स्वादिष्ट लगते हैं। वे मनुष्य
के भीतर उतरते चले जाते हैं।
23दुष्ट मन वाले की चिकनी चुपड़ी बातें होती है ऐसी,
जैसे माटी के बर्तन पर चिपके चांदी के वर्क। 24द्वेषपूर्ण
व्यक्ति अपने मधुर वाणि में द्वेष को ढकता हैं। किन्तु
अपने हृदय में वह छल को पालता है। 25उसकी मोहक
वाणी से उसका भरोसा मत कर, क्योंकि उसके मन में
सात घृणित बातें भरी हैं। 26छल से किसी का दुर्भाव चाहे
छुप जाय किन्तु उसकी दुष्टता सभा के बीच उघड़ेगी।
27यदि कोई गढ़ा खोदता है किसी के लिये तो वह
स्वयं ही उसमें गिरेगा; यदि कोई व्यक्ति कोई पत्थर
लुढ़काता है तो वह लुढ़क कर उसी पर पड़ेगा।
28ऐसा व्यक्ति जो झूठ बोलता है, उनसे घृणा करता है
जिनको हानि पहुँचाता और चापलूस स्वयं का नाश करता।
27 कल के विषय में कोई बड़ा बोल मत बोलो।
कौन जानता है कल क्या कुछ घटने को है।
2अपने ही मुँह से अपनी बड़ाई मत करों दूसरों को
तुम्हारी प्रशंसा करने दो।
3कठिन है पत्थर ढोना, और ढोना रेत का, किन्तु
इन दोनों से कहीं अधिक कठिन है मूर्ख के द्वारा
उपजाया गया कष्ट।
4क्रोध निर्दय और दर्दम्य होता है। वह नाश कर
देती है। किन्तु ईर्ष्या बहुत ही बुरी है।
5छिपे हुए प्रेम से, खुली घुड़की उत्तम है।
6हो सकता है मित्र कभी दुःखी करें, किन्तु ये उसका
लक्ष्य नहीं है। इससे शत्रु भिन्न है। वह चाहे तुम पर
दया करे किन्तु वह तुम्हें हानि पहुँचाना चाहता है।

[7]पेट भर जाने पर शहद भी नहीं भाता किन्तु भूख में तो हर चीज भाती है।

[8]अपना घर छोड़कर भटकता मनुष्य ऐसा, जैसे कोई चिड़िया भटकी निज घोंसले से।

[9]इत्र और सुगंधित धूप मन को आनन्द से भरते है और मित्र की सच्ची सम्मति से मन उल्लास से भर जाता है।

[10]अपने मित्र को मत भूलों न ही अपने पिता के मित्र को। और विपत्ती में सहायता के लिये दूर अपने भाई के घर मत जाओं। दूर के भाई से पास का पड़ोसी अच्छा है।

[11]हे मेरे पुत्र, तू बुद्धिमान बन जा और मेरा मन आनन्द से भर दे। ताकि मेरे साथ जो घृणा से व्यवहार करे, मैं उसको उत्तर दे सकूँ।

[12]विपत्ति को आते देखकर बुद्धिमान जन दूर हट जाते हैं, किन्तु मूर्खजन बिना राह बदले चलते रहते हैं और फंस जाते है।

[13]जो किसी पराये पुरुष का जमानत भरता है उसे अपने वस्त्र भी खोना पड़ेगा।

[14]ऊँचे स्वर में 'सुप्रभात' कह कर के अलख सवेरे अपने पड़ोसी को जगया मत कर। वह एक शाप के रूप में झेलेगा आर्शीवाद में नहीं।

[15]झगड़ालू पत्नी होती है ऐसी जैसी दुर्दिन की निरन्तर वर्षा।

[16]रोकना उसको होता है वैसा ही जैसे कोई रोके पवन को और पकड़े मुट्ठी में तेल को।

[17]जैसे धार धरता है लोहे से लोहा, वैसी ही जन एक दूसरे की सीख से सुधरते है।

[18]जो कोई अंजीर का पेड़ सिंचता है, वह उसका फल खाता है। वैसे ही जो निज स्वामी की सेवा करता, वह आदर पा लेता है।

[19]जैसे जल मुखड़े को प्रतिबिम्बित करता है, वैसे ही हृदय मनुष्य को प्रतिबिम्बित करता है।

[20]मृत्यु और महानाश कभी तृप्त नहीं होते और मनुष्य की आँखें भी तृप्त नहीं होती।

[21] चांदी और सोने को भट्ठी–कुठाली में परख लिया जाता है। वैसे ही मनुष्य उस प्रशंसा से परखा जाता है जो वह पाता है।

[22]तू किसी मूर्ख को चूने में पीस–चाहे जितना महीन करे और उसे पीस कर अनाज सा बना देवे उसका चूर्ण किन्तु उसकी मूर्खता को, कभी भी उससे तू दूर न कर पायेगा।

[23]अपने रेवड़ की हालत तू निश्चित जानता है। अपने रेवड़ की ध्यान से देखभाल कर। [24]क्योंकि धन दौलत तो टिकाऊ नहीं होते हैं। यह राजमुकुट पीढ़ी–पीढ़ी तक बना नहीं रहता है।

[25]जब चारा कट जाता है, तो नई घास उग आती है। वह घास पहाड़ियों पर से फिर इकट्ठी कर ली जाती है।

[26]तब तब ये मेमनें ही तुझे वस्त्र देंगे और ये बकरियाँ खेतों की खरीद का मूल्य बनेगीं। [27]तेरे परिवार को, तेरे दास दासियों को और तेरे अपने लिए भरपूर बकरी का दूध होगा।

28 दुष्ट के मन में सदा भय समाया रहता है और इसी कारण वह भागता फिरता है। किन्तु धर्मी जन सदा निर्भय रहता है वैसे हो जैसे सिंह निर्भय रहता है।

[2]देश में जब अराजकता उभर आती है बहुत से शासक बन बैठते है। किन्तु जो समझता है और ज्ञानी होता है, ऐसा मनुष्य ही व्यवस्था स्थिर करता है।

[3] वह राजा जो गरीब को दबाता है, वह वर्षा की बाढ़ सा होता है जो फसल नहीं छोड़ती।

[4]व्यवस्था के विधान को जो त्याग देते है, दुष्टों की प्रशंसा करते, किन्तु जो व्यवस्था के विधान को पालते उनका विरोध करते।

[5]दुष्ट जन न्याय को नहीं समझते है। किन्तु जो यहोवा की खोज में रहते है, उसे पूरी तरह जानते है।

[6]वह निर्धन उत्तम है जिसकी राह खरी है। न कि वह धनी पुरुष जो टेढ़ी चाल चलता है।

[7]जो व्यवस्था के विधानों का पालन करता है, वही है विवेकी पुत्र; किन्तु जो व्यर्थ के पेटुओं को बनाता साथी, वह पिता का निरादर करता है।

[8]वह जो मोटा ब्याज वसूल कर निज धन बढ़ाता है, वह तो यह धन जोड़ता है किसी ऐसे दयालु के लिए जो गरीबों पर दया करता है।

[9]यदि व्यवस्था के विधान पर कोई कान नहीं देता तो उसको विनतियाँ भी घृणा के योग्य होगी।

[10]वह तो अपने ही जाल में फंस जायेगा जो सीधे लोगों को बुरे मार्ग पर भटकाता है। किन्तु दोषरहित लोग उत्तम आशीष पायेगा।

11धनी पुरुष निज आँखों में बुद्धिमान हो सकता है किन्तु वह गरीब जन जो बुद्धिमान होता है सत्य को देखता।

12सज्जन जब जीतते है, तो सब प्रसन्न होते है। किन्तु जब दुष्ट को शक्ति मिल जाती है तो लोग छिप–छिप कर फिरते है।

13जो निज पापों पर पर्दा डालता है, वह तो कभी नहीं फूलता–फलता है किन्तु जो निज दोषों को स्वीकार करता और त्यागता है, वह दया पाता है।

14धन्य है, वह पुरुष जो यहोवा से सदा डरता है, किन्तु जो अपना मन कठोर कर लेता है, विपत्ति में गिरता है।

15दुष्ट लोग असहाय जन पर शासन करते हैं। ऐसे जैसे दहाड़ता हुआ सिंह अथवा झपटता हुआ रीछ।

16एक क्रूर शासक में न्याय को कमी होती है। किन्तु जो बुरे मार्ग से आये हुए धन से घृणा करता है, दीर्घ आयु भोगता है।

17किसी व्यक्ति को दूसरे की हत्या का दोषी ठहराया हो तो उस व्यक्ति को शांति नहीं मिलेगी। उसे सहायता मत कर।

18यदि कोई व्यक्ति निष्कलंक हो तो वह सुरक्षित है। यदि वह बुरा व्यक्ति हो तो वह अपना सामर्थ खो बैठेगा।

19जो अपनी धरती जोतता–बोता है और परिश्रम करता है, उसके पास सदा भर पूर खाने को होगा। किन्तु जो सदा सपनों में खोया रहता है, सदा दरिद्र रहेगा।

20परमेश्वर निज भक्त पर आशीष बरसाता है, किन्तु वह मनुष्य जो सदा धन पाने को लालायित रहता है, बिना दण्ड के नहीं बचेगा।

21किसी धनवान व्यक्ति का पक्षपात करना अच्छा नहीं होता तो भी कुछ न्यायाधीश कभी कर जाते पक्षपात मात्र छोटे से रोटी के ग्रास के लिए।

22सूम सदा धन पाने को लालायित रहता है और नहीं जानता कि उसकी ताक में दरिद्रता है।

23वह जो किसी जन को सुधारने को डांटता है, वह आधिक प्रेम पाता है, अपेक्षा उसके जो चापलूसी करता है।

24कुछ लोग होते है जो अपने पिता और माता से चुराते है। वह कहते है, "यह बुरा नहीं है।" यह उस बुरा व्यक्ति जैसा है जो घर के भीतर आकर सभी वस्तुओं को तोड़ फोड़ कर देते हैं।

25लालची मनुष्य तो मतभेद भड़काता, किन्तु वह मनुष्य जिसका भरोसा यहोवा पर है फूलेगा–फलेगा।

26मूर्ख को अपने पर बहुत भरोसा होता है। किन्तु जो ज्ञान की राह पर चलता है, सुरक्षित रहता है।

27जो गरीबों को दान देता रहता है उसको किसी बात का अभाव नहीं रहता। किन्तु जो उनसे आँख मूँद लेता है, वह शाप पाता है।

28जब कोई दुष्ट शक्ति पा जाता है तो सज्जन छिप जाने को दूर चले जाते है। किन्तु जब दुष्ट जन का विनाश होता है तो सज्जनों को वृद्धि प्रकट होने लगती है।

29 जो घुड़कियाँ खाकर भी अकड़ा रहता है, वह अचानक नष्ट हो जायेगा। उसका उपाय तक नहीं बचेगा।

2जब धर्मी जन का विकास होता है, तो लोग आनन्द मनाते है। जब दुष्ट शासक बन जाता है तो लोग कराहते है।

3ऐसा जन जो विवेक से प्रेम रखता है, पिता को आनन्द पहुँचाता है। किन्तु जो वेश्याओं की संगत करता है, अपना धन खो देता है।

4न्याय से राजा देश को स्थिरता देता है। किन्तु राजा लालची होता तो लोग उसे घूँस देते है अपना काम करवाने के लिये। तब देश दुर्बल हो जाता है।

5जो अपने साथी की चापलूसी करता है वह अपने पैरों के लिए जाल पसारता है।

6पापी स्वयं अपने जाल में फंसता है। किन्तु एक धर्मी गाता और प्रसन्न होता है।

7सज्जन चाहते है कि गरीबों को न्याय मिले किन्तु दुष्टों को उनकी तनिक चिन्ता नहीं होती।

8जो ऐसा सोचतें है कि हम दूसरों से उत्तम है, वे विपत्ति उपजाते और सारे नगर को अस्त–व्यस्त कर देते है। किन्तु जो जन बुद्धिमान होते है, शांति को स्थापित करते है।

9बुद्धिमान जन यदि मूर्ख के साथ में वाद–विवाद सुलझाना चाहता है, तब मूर्ख कुतर्क करता और उल्टी–सीधी बातें करता जिससे दोनों के बीच सन्धि नहीं हो पाती।

10खून के प्यासे लोग, सच्चे लोगों से घृणा करते है। और वे उन्हें मार डालना चाहते है।

11मूर्ख मनुष्य को तो बहुत शीघ्र क्रोध आता है। किन्तु बुद्धिमान धीरज धरके अपने पर नियंत्रण रखता है।

12यदि एक शासक झूठी बातों को महत्व देता है
तो उसके अधिकारी सब भ्रष्ट हो जाते है।
13एक हिसाब से गरीब और जो व्यक्ति को लूटता
है, वह समान है। यहोवा ने ही दोनों को बनाया है।
14यदि कोई राजा गरीबों पर न्यायपूर्ण रहता है तो
उसका शासन सुदीर्घ काल बना रहेगा।
15दण्ड और डाँट से सुबुद्धि मिलती है किन्तु यदि
माता–पिता मनचाहा करने को खुला छोड़ दे, तो वह
निज माता का लज्जा बनेगा।
16दुष्ट के राज्य में पाप, पनप जाते है किन्तु अन्तिम
विजय तो सज्जन की होती है।
17पुत्र को दण्डित कर जब वह अनुचित करे, फिर
तो तुझे उस पर सदा ही गर्व रहेगा। वह तेरी लज्जा का
कारण कभी नहीं होगा।
18यदि कोई देश परमेश्वर की राह पर नहीं चलता
तो उस देश में शांति नहीं होगी। वह देश जो परमेश्वर
की व्यवस्था पर चलता, आनन्दित रहेगा।
19केवल शब्द मात्र से दास नहीं सुधरता है। चाहें वह
तेरे बात को समझ ले, किन्तु उसका पालन नहीं करेगा।
20यदि कोई बिना विचारे हुए बोलता है तो उसके
लिए कोई आशा नहीं। अधिक आशा होती है एक मूर्ख
के लिये अपेक्षा उस जन के जो विचारे बिना बोले।
21यदि तू अपने दास को सदा वह देगा जो भी वह
चाहे, तो अंत में–वह तेरा एक उत्तम दास नहीं रहेगा।
22क्रोधी मनुष्य मतभेद भड़काता है, और ऐसा जन
जिसको क्रोध आता हो, बहुत से पापों का अपराधी
बनता है।
23मनुष्य को अहंकार नीचा दिखाता है, किन्तु वह
व्यक्ति जिसका हृदय विनम्र होता आदर पाता है।
24जो चोर का संग पकड़ता है वह अपने से शत्रुता
करता है; क्योंकि न्यायालय में जब उस पर सच उगलने
को ज़ोर पड़ता है तो वह कुछ भी कहने से बहुत डरा
रहता है।
25भय मनुष्य के लिये फँदा प्रमाणित होता है, किन्तु
जिसकी आस्था यहोवा पर रहती है, सुरक्षित रहता है।
26बहुत लोग राजा के मित्र होना चाहते हैं, किन्तु
वह यहोवा ही है जो जन का सच्चा न्याय करता।
27सज्जन घृणा करते हैं ऐसे उन लोगों से जो सच्चे
नहीं होते; और दुष्ट सच्चे लोगों से घृणा रखते हैं।

याके के पुत्र आगूर की सूक्तियाँ

30 ये सूक्ति आगूर की हैं, जो याके का पुत्र था
यह पुरुष ईतीएल और उक्काल से:*कहता है
2मैं महाबुद्धिहीन हूँ। मुझमें मनुष्य की समझदारी
बिल्कुल नहीं है।
3मैंने बुद्धि नहीं पायी और मेरे पास उस पवित्र का
ज्ञान नहीं है।
4स्वर्ग से कोई नहीं आया और वहाँ के रहस्य ला
सका पवन को मुट्ठी में कोई नहीं बाँध सका। कोई
नहीं बाँध सका पानी को कपड़े में और कोई नहीं जान
सका धरती का छोर। और यदि कोई इन बातों को
कर सका है, तो मुझसे कहो, उसका नाम और नाम
उसके पुत्र का मुझको बता, यदि तू उसको जानता हो।
5वचन परमेश्वर का दोष रहित होता है, जो उसकी
शरण जाते वह उनकी ढाल होता। 6तू उसके वचनों
में कुछ घट–बढ़ मत कर। नहीं तो वह तुझे डांटे
फटकारेगा और झूठा ठहराएगा।
7हे यहोवा, मैं तुझसे दो बातें माँगता हूँ: जब तक मैं
जीऊँ, तू मुझको देता रह। 8तू मुझसे मिथ्या को, व्यर्थ
को दूर रख। मुझे दरिद्र मत कर और न ही मुझको
धनी बना। मुझको बस प्रतिदिन खाने को देता रह।
9कहीं ऐसा न हो जाये बहुत कुछ पा कर के मैं तुझको
त्याग दूँ; और कहने लगूँ ‘कौन परमेश्वर है?’ और
यदि निर्धन बनूँ और चोरी करूँ, और इस प्रकार मैं
अपने परमेश्वर के नाम को लजाऊँ।
10तू स्वामी से सेवक की निन्दा मत कर नहीं तो
तुझको, वह अभिशाप देगा और तुझे उसकी भरपाई
करनी होगी।
11ऐसे भी होते हैं जो अपने पिता को कोसते है,
और अपनी माता को धन्य नहीं कहते हैं।
12होते हैं ऐसे भी, जो अपनी आँखों में तो पवित्र बने
रहते किन्तु अपवित्रता से अपनी नहीं धुले होते हैं।
13ऐसे भी होते हैं जिनकी आँखें सदा तनी ही रहती,
और जिनकी आँखों में घृणा भरी रहती है।

ईतीएल और उक्काल से इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है: कहा इस व्यक्ति ने, “मैं बहुत दुर्बल हूँ। किन्तु सफल में होऊँगा।

[14]ऐसे भी होते हैं जिनके दांत कटार हैं और जिनके
जबड़ों में खंजर जड़े रहते हैं जिससे वे इस धरती के
गरीबों को हड़प जायें, और जो मानवों में से अभावग्रस्त
है उनको वे निगल लें।

[15]जोंक की दो पुत्र होती हैं वे सदा चिल्लाती रहती,
“देओ, देओ।” तीन वस्तु ऐसी हैं जो तृप्त कभी न
होती और चार ऐसी जो कभी बस नहीं कहती। [16]कब्र,
बांझ–कोख और धरती जो जल से कभी तृप्त नहीं,
और वह अग्नि जो कभी ‘बस’ नहीं कहती।

[17]जो आँख अपने ही पिता पर हँसती है, और माँ
की बात मानने से घृणा करती है, घाठी के कौवे उसे
नोंच लेंगे और उसको गिद्ध खा जायेंगे।

[18]तीन बातें ऐसी हैं जो मुझे अति विचित्र लगती,
और चौथी ऐसी जिसे मैं समझ नहीं पाता। [19]आकाश
में उड़ते हुए गरुड़ का मार्ग, और लीक नाग की जो
चट्टान पर चला; और महासागर पर चलते जहाज़
की राह और उस पुरुष का मार्ग जो किसी कामिनी
के प्रेमपाश में बंधा हो।

[20]चरित्र हीन स्त्री की ऐसी गति होती है, वह खाती
रहती और अपना मुख पोंछ लेती, और कहा करती
है, मैंने तो कुछ भी बुरा नहीं किया।

[21]तीन बातें ऐसी हैं जिनसे धरा काँपती है और
एक चौथी है जिसे वह सह नहीं कर पाती। [22]दास जो
बन जाता राजा, मूर्ख जो सम्पन्न,[23]ब्याह किसी ऐसी
से जिससे प्रेम नहीं हो; और ऐसी दासी जो स्वामिनी
का स्थान ले ले। [24]चार जीव धरती के, जो यद्यपि
बहुत क्षुद्र हैं किन्तु उनमें अत्याधिक विवेक भरा
हुआ है। [25]चीटियाँ जिनमें शक्ति नहीं होती है फिर
भी वे गर्मी में अपना खाना बटोरती हैं; [26]बिज्जू दुर्बल
प्राणी हैं फिर भी वे खड़ी चट्टानों में घर बनाते;
[27]टिड्डियों का कोई भी राजा नहीं होता है फिर भी वे
पंक्ति बांध साथ आगे बढ़ती हैं। [28]और वह छिपकली
जो बस केवल हाथ से ही पकड़ी जा सकती है, फिर
भी वह राजा के महलों में पायी जाती। [29]तीन प्राणी
ऐसे हैं जो लगते महत्वपूर्ण जब वे चलते हैं, दरअसल
वे चार हैं: [30]एक सिंह, जो सभी पशुओं में शक्तिशाली
होता है, जो कभी किसी से नहीं डरता; [31]गर्वीली
चाल से चलता हुआ मुर्गा और एक बकरा और वह
राजा जो अपनी सेना के मध्य है।

[32]तूने यदि कभी कोई आचरण किया मूर्खता का,
और अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बना हो अथवा तूने कभी
रचा हो कुचक्र कोई तो तू अपना मुँह अपने हाथों से
ढक ले।

[33]जैसे मथने से दूध निकलता है मक्खन और नाक
मरोड़ने से लहू निकल आता है वैसे ही जगाना क्रोध
का होता है झगड़ों का भड़काना।

राजा लमुएल की सूक्तियाँ

31 ये सूक्तियाँ राजा लमूएल की, जिन्हें उसे उसकी
माता ने सिखाया था।

[2]तू मेरा पुत्र है वह पुत्र जो मुझ को प्यारा है। जिसके
पाने को मैंने मन्नत मानी थी। [3]तू व्यर्थ अपनी शक्ति
स्त्रियों पर मत व्यय करो स्त्री ही राजाओं का विनाश
करती हैं। इसलिए तू उन पर अपना क्षय मत कर।
[4]हे लमूएल! राजा को मधुपान शोभा नहीं देता, और
न ही यह कि शासक को यवसुरा ललचाये। [5]नहीं तो,
वे मदिरा का बहुत अधिक पान करके, विधान की
व्यवस्था को भूल जायेगें और वे सारे दीन दलितों के
अधिकारों को छीन लेंगे। [6]वे जो मिटे जा रहे हैं उन्हें
यवसुरा, मदिरा उनको दे जिन पर दारूण दुःख पड़ा
हो। [7]उनको पीने दे और भूलने दे उन्हें उनके अभावों
को। उनका वह दारुण दुःख उन्हें नहीं याद रहे।

[8]तू बोल उनके लिये जो कभी भी अपने लिये बोल
नहीं पाते हैं; और उन सब के, अधिकारों के लिये
बोल जो अभागे हैं। [9]तू डट करके खड़ा रह उन बातों
के हेतू जिनको तू जानता हैं कि वे उचित, न्यायपूर्ण,
और बिना पक्ष–पात के सबका न्याय कर। तू गरीब
जन के अधिकारों की रक्षा कर और उन लोगों के
जिनको तेरी अपेक्षा हो।

आर्दश पत्नी

10 गुणवंती पत्नी कौन पा सकता है?
वह जो मणि–माणिको से कही अधिक मूल्यवान।
11 जिसका पति उसका विश्वास कर सकता है।
वह तो कभी भी गरीब नहीं होगा।
12 सद्पत्नी पति के संग उत्तम व्यवहार करती।
अपने जीवन भर वह उसके लिए
कभी विपत्ति नहीं उपजाती।

13 वह सदा ऊनी और सूती
कपड़े बनाने में व्यस्त रहती।
14 वह जलयान जो दूर देश से आता है वह हर
कहीं से घर पर भोज्य वस्तु लाती।
15 तड़के उठकर वह भोजन पकाती है।
अपने परिवार का और दासियों का भाग
उनको देती है।
16 वह देखकर एंव परख कर खेत मोल लेती है
जोड़े धन से वह दाख की बारी लगाती है।
17 वह बड़ा श्रम करती है।
वह अपने सभी काम करने को समर्थ है।
18 जब भी वह अपनी बनायी वस्तु बेचती है,
तो लाभ ही कमाती है।
वह देर रात तक काम करती है।
19 वह सूत कातती और निज वस्तु बुनती है।
20 वह सदा ही दीनदुखी को दान देती है,
और अभाव ग्रस्त जन की सहायता करती।
21 जब शीत पड़ती तो वह अपने परिवार हेतु
चिंतित नहीं होती है।
क्योंकि उसने सभी को उत्तम
गरम वस्त्र दे रख है।
22 वह चादर बनाती है और गद्दी पर फैलाती है।
वह सन से बने कपड़े पहनती है।
23 लोग उसके पति का आदर करते हैं
वह स्थान पाता है नगर प्रमुखों के बीच।
24 वह अति उत्तम व्यापारी बनती है।
वह वस्त्रों और कमरबंदों को बनाकर के
उन्हें व्यापारी लोगों को बेचती है।
25 वह शक्तिशाली है, और लोग
उसको मान देते हैं।
26 जब वह बोलती है, वह विवेकपूर्ण रहती है।
उसकी जीभ पर उत्तम शिक्षायें सदा रहती है।
27 वह कभी भी आलस नहीं करती है
और अपने घर बार का ध्यान रखती है।
28 उसके बच्चे खड़े होते और उसे आदर देते है।
उसका पति उसकी प्रशंसा करता है।
29 उसका पति कहता है,
"बहुत सी स्त्रियाँ होती हैं।
किन्तु उन सब में तू ही सर्वोत्तम अच्छी पत्नी है।"
30 मिथ्या आकर्षण और सुन्दरता दो पल की है,
किन्तु वह स्त्री जिसे यहोवा का भय है,
प्रशंसा पायेगी।
31 उसे वह प्रतिफल मिलना चाहिए जिसके वह
योग्य है, और जो काम उसने किये हैं,
उनके लिए चाहिए कि सारे लोग के
बीच में उसकी प्रशंसा करें।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center
Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center
All rights reserved.

These Scriptures:
- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center
P.O. Box 820648
Fort Worth, Texas 76182, USA
Telephone: 1-817-595-1664
Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE
E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

Order online – To order a copy of our texts online, go to: http://www.wbtc.org

Current license agreement – *This license is subject to change without notice. The current license can be found at:* http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from:
http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html